पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू/एन०पी०/318/2017-19

ओ३म्

शृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२२, अंकः-११, मई, सन्-२०१६, सं०-२०७६ वि०, दयानंदाब्द १६५, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,१२०; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

महाराणा प्रताप जयन्ती पर विशेष

प्रताप के प्रताप को संसार की कोई भी शक्ति नहीं रोक सकी

अन्ततः मेवाड़ की विजय-वैजयंती फहरा उठी

-श्रीश्यामनारायण पाण्डेय-

दयासागर! जब हल्दीघाटी के महायुद्ध में जीवन दूर और मृत्यु निकट होती जाती थी तभी एक राजपूत पहाड़ की चोटी पर बैठकर मृत्यु-पीड़ा से तड़पते हुए अपने सगे भाई-बन्धुओं को देख रहा था, सपूतों का अमर बलिदान देख रहा था और देख रहा था मेवाड़-गौरव की रक्षा के लिए राजपूतों का आत्म विसर्जन। वह आया तो था मुगलों की ओर से अपने भाइयों का शिर काटने; लेकिन अचानक उसका चित्त बदल गया, उसे अपने ऊपर घृणा हुई और क्रोध भी। अपनी जननी-जन्मभूमि की दुर्दशा देखकर उसकी आँखें डबडबा गईं। वह सिसकियाँ भरने लगा। इधर तुमुल-युद्ध हो रहा था, उधर वह फूट-फूटकर रो रहा था। रोते-रोते उसने देखा कि तू वैरियों के व्यूह से निकल रहा है और तेरी रक्षा के लिए झालामान्ना अपने शत्रुओं को तलवार के घाट उतार कर मृत्यु का आलिंगन कर रहा है। उसने सोचा, यदि झाला की जगह मैं होता, और रो पड़ा। देश को धोखा देकर जिस शान्ति के लिए लालायित हो रहा था उसमें उसे घोर अशान्ति मिली। जिस सुख के लिए वीर-प्रसविनी मेवाड़भूमि को लात मारकर चला गया था, उसमें उसे असह्य दुःख था। वह पागल की तरह उठा और चेतक के पीछे चल पड़ा। वह चाहता था तुझसे क्षमा माँगकर अपन प्रायश्चित्त करना, उसकी इच्छा थी तेरे पैरों पर मस्तक रखकर घड़ी भर रो लेने की और उसकी अभिलाषा थी तेरे वरदान से अपने को अभय बनाने की। वह जा रहा था और उसके हृदय का पाप आँखों के पथ से बह रहा था। उसने देखा, चेतक के पीछे खुरासानी और मुलतानी नाम के दो शत्रु पड़े हैं। उसने तुरन्त म्यान से तलवार निकालकर दोनों को वहीं ढेर कर दिया और तुझे पुकारा, 'ऐ नीलाघोड़ा असवार'। तूने मुड़कर देखा और पहचान लिया! तू बोल उठा, इतने राजपूतों के शोणित से तेरी प्यास नहीं बुझी तो आ, अपनी तलवार के पानी से तेरी प्यास बुझा दूँ। लेकिन वह दौड़कर तेरे पैरों से लिपट गया और सिसक-सिसककर रोने लगा। तेरी आँखों में भी स्नेह के आँसू आ गये। पाषाण-हृदय पर्वत निर्झर-मिस रो रहा था, तड़प-तड़पकर बादल रो रहा था और भाई के साथ फूट-फूटकर तू रो रहा था। तुझे हल्दीघाटी के बलिदानों के बदले बन्धु-स्नेह मिला। तेरे चेहरे पर सन्तोष का एक हल्का सा प्रकाश था, लेकिन यह क्या? चेतक छटपटा क्यों रहा है? तुम दोनों ने व्याकुल आँखों से घोड़े की ओर देखा। घावों से अविराम रक्त बहने के कारण वह क्षणभंगुर संसार छोड़ रहा था। लाख यत्न किया लेकिन वह स्वामिभक्त चेतक वहाँ चला गया जहाँ उसे सांसारिक झगड़ों का भय नहीं था। हाय, जिन आँखों में क्षण भर पहले स्नेह के आँसू छलछला रहे थे, उनमें दुःख के आँसू भर गये। चेतक की विरह-जन्य पीड़ा से तिलमिला तो गया, लेकिन तत्क्षण तेरा वीर-हृदय सँभल गया। तू बन्धुदत्त वाजि पर सवार होकर कमलमीर की ओर चल पड़ा। चिर वियोग के बाद तेरा और शक्तिसिंह का मिलन कितना मधुर था; लेकिन चेतक की मृत्यु!

ठोकर खा-खाकर गिरते थे। किस लिए?

वीर वैरागी! अब तेरे दिन भागने के और रात जागने की आई! तू हल्दीघाटी के युद्ध के बाद चावण्ड के समीप जावरमाला की गुफाओं में दिन बसर करने लगा। वह स्थान उस जगह है, जहाँ सुदृढ़ गढ़ की तरह चारों ओर दुर्भेद्य पहाड़ खड़े होकर तेरी रक्षा कर रहे थे। शत्रुओं के आक्रमण का बिल्कुल भय नहीं था। समीप ही आजादी के लोभ से तलवार लेकर मरनेवाले भीलों की बस्ती थी। तेरी और तेरे बच्चों की रक्षा के लिए उन्होंने प्राणों का ममत्व छोढ़ दिया था। वे जंगलों और पहाड़ों में शत्रुओं की टोह लगाकर टूट पड़ते थे और उन्हें तितर-बितर करके छिप जाते थे।

शूर स्वाधीन! स्वाधीनता तेरे प्राणों के साथ एकाकार हो गई थी। तुझे दो ग्रास पवित्र भोजन मिलना कठिन था। जिन राजकुमारों को दूध-बताशा से भी अनिच्छा थी, वे मुट्ठी भर मटर के लिए तरसते थे। मखमली सेज भी जिनके शरीर में गड़ती थी, वे काँटों पर दौड़ते थे। जो महलों में फूलों के ऊपर टहलने से भी थक जाते थे, वे पथरीले पथों में इसलिए कि शिशोदिया के निर्मल यश में कहीं कलंक की कालिमा न लग जाय, इसलिए कि मेवाड़ का मस्तक कहीं झुक न जाय, इसलिए कि अधर्म की वेदी पर कहीं धर्म का बलिदान न हो और इसलिए कि द्रौपदी की तरह किसी दुःशासन द्वारा स्वर्गादपि गरीयसी जननी-जन्मभूमि का चीर न खींचा जाय।

छत्रहीन सम्राट! चाँदनी रात थी, तू गुफा के द्वार पर बैठकर मेवाड़-उद्धार की विकट समस्या सुलझा रहा था, भीतर मेवाड़ की राजराजेश्वरी भूख से तड़पते हुए बच्चों को घासों की रूखी रोटियों का एक एक टुकड़ा दे-देकर बुझा रही थी। कई दिन के निर्जल व्रत के बाद बच्चे पारण करने में लगे हुए थे। इतने में एक वनविलाव ने तेरी कन्या के हाथ से रोटी छीन ली। वह चिल्ला उठी। तेरा ध्यान टूटा। तूने दौड़कर उस बिलखते हुए बच्चे को गोदी में उठा लिया और रोने का कारण पूछा। उसने अपनी तुतली बोली में दुःख-कथा कह सुनाई। तेरा जो हृदय अनेक विघ्न-बाधाओं की आँधी से हिमालय के समान अटल रहा, वही आज बेटी की बातें सुनकर हिम की तरह पिघल गया। झालामान्ना के मरने का दुःख हुआ चेतक के वियोग की पीड़ा हुई, मेवाड़-वाहिनी के विनष्ट होने का शोक हुआ और शत्रुविजित गढ़ों के विरह से चिन्ता हुई; लेकिन तेरा हृदय अरावली के समान ही दृढ़ रहा। किन्तु आज वह पीपल के पत्ते के समान चंचल हो गया। तू सन्धि-पत्र लिखने चला; किन्तु वीर-हृदया रानी ने कलम पकड़कर कहा, प्राणनाथ! सन्धि-पत्र लिखने का अधिकार तुम्हें नहीं है, यह अधिकार तो उन्हें प्राप्त है जिन्होंने हल्दीघाटी के रण में प्राणोत्सर्ग किये हैं; यह अधिकार झालामान्ना और चेतक को है और उस मेवाड़-वाहिनी को जिसने अपना जीवन देकर मेवाड़ को जीवन दिया है। तुम्हारे रण के कारण कितनी माताओं की गोदियाँ सूनी पड़ गईं, कितनी ललनाओं के सिन्दूर धुल गये और हाथ की चूड़ियाँ टूट गईं और प्राणवल्लभ! तुम सन्धि-पत्र लिख रहे हो! कभी नहीं, तुम सन्धि-पत्र नहीं लिख सकते। यदि मेवाड़ की रक्षा का भार तुमसे सहन नहीं होता तो आज से मैं स्वाधीनता के लिए लड़ूँगी, तुम अपनी तलवार मुझे दो, मैं चण्डी बन जाऊँ प्रियतम!

रानी की बातें सुनकर तेरी मोह-निद्रा टूट गई। तूने रानी की ओर लज्जा की आँखों से देखा। इतने में वैरियों ने तुझे घेर लिया और तू अपने भूखे परिवार के साथ भीलों की सहायता से कहीं छिप गया। क्या तू बता सकता है, वह कठोर तप किस लिए था?

हिन्दू-सूर्य! शत्रुओं को चावण्ड का भी पता लग गया। अब तुझे मेवाड़ में तिल भर भी जगह सुख से विश्राम करने की नहीं थी। तू मेवाड़ छोड़ देने का निश्चय कर अरावली की चोटी पर चढ़ गया और वहाँ से शोक-वासना जननी का मौन-विलाप सुनकर रो पड़ा, किन्तु रोने का समय कहाँ था? तूने झुककर नमस्कार किया। रानी ने अपने अँचरे का कोना पकड़कर वन्दना की, और बच्चों ने अपने छोटे-छोटे हाथों से प्रणाम किया। सबकी आँखों में गहरी वेदना के आँसू थे। राज परिवार दो अंगुल सुरक्षित भूमि के लिए

(शेष पृष्ठ 3 पर)

विनय पीयूष

तेजस्वी है ब्रह्म

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳशुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान्
व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।। (यजुर्वेद : 40/8)

तेजस्वी है ब्रह्म !

अकाय और अव्रण,
अस्नायु और शुद्ध,
अपापबिद्ध !

सर्वव्यापी है ब्रह्म,
सब ओर से व्याप्त।

ब्रह्म कवि है, मनीषी है,
परिभू है, स्वयंभू है।

उसकी व्यवस्था है निर्दोष और शाश्वत,
सब की और सबके लिए !

सर्वशक्तिमान है ब्रह्म !
ब्रह्म है तेजस्वी !!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

वेद मित्र

भारत की राजधानी दिल्ली में २६.०३.२०१६ को स्वनामधन्य महाशय धर्मपाल जी, एम.डी.एच., का ९६वाँ जन्मदिवस 'पद्माभिषेक महोत्सव' के रूप में गौरव-गरिमा पूर्ण ढंग से मनाया गया। महाशय जी इस सम्मान के पूर्ण अधिकारी हैं। मसालों के बादशाह और विशुद्ध वैदिक शास्त्रीय हवन-सामग्री के इस आदि निर्माता के आर्थिक सहयोग और आशीर्वाद के बल पर देश विदेश में हजारों संस्थाएँ फलफूल रही हैं। जिस कल्पवृक्ष की छाया में अनेकों को जीवनदान मिलता है उससे यदि कोई वंचित या उपेक्षित रह जाता है तो यह विस्मय की बात बन जाती है। 'आर्य लोक वार्ता' के मार्च २०१६ अंक में 'होली की भोली छींटें' शीर्षक से प्रकाशित एक दोहे में यह विस्मय व्यक्त हुआ-

मिला पद्मभूषण सुखद, गाते गौरव-गान,
लघु पत्रों की ओर भी, कभी गया क्या ध्यान?

सन् २००४ में लगभग ढाई सौ आर्य परिवारों के परिचय-संकलन को एक विशेषांक के रूप में छपाने की योजना के सदुद्देश्य से, दिल्ली प्रवास के दौरान मैंने अपने भांजे श्री वी.के.मिश्र, जो उन दिनों कृषि-निकेतन, पंजाबी बाग में रहते थे और पूषा संस्थान में अधिकारी थे, के साथ कार द्वारा कीर्ति नगर पहुँचा। बड़ा विकट जाम था। कई घंटे लग गये कीर्ति नगर पहुँचने में। महाशय जी से भेंट हुई। मैंने 'आर्य लोक वार्ता' का नया अंक उन्हें भेंट किया तथा अपनी योजना से अवगत कराया। सहायता का आश्वासन प्राप्त करके मैं अपने ठिकाने पर लौट आया। अगले दिन लखनऊ वापस आने का कार्यक्रम था। किन्तु आश्वासन आश्वासन ही रहा- आज तक उक्त ग्रंथ का प्रकाशन भी नहीं हो सका है और महाशय जी से कोई सहयोग भी नहीं मिला। तथापि मैं निरन्तर महाशय जी से सम्बन्धित समाचारों का प्रमुखता के प्रकाशन करता रहा हूँ और प्रत्येक अंक उनकी सेवा में भेजता रहा हूँ। यह सत्य है कि इसमें महाशय जी का कोई दोष नहीं है। दोष उन कर्मचारियों और कार्यकर्ताओं का है, जिनसे वे घिरे हुए थे।

दिसम्बर २००४ में मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आसिफ अली रोड, नई दिल्ली मध्याह्न श्री आनन्द कुमार आर्य से मिलने की दृष्टि से गया। आनन्द बाबू उन दिनों सार्वदेशिक के कार्यकर्ता प्रधान थे। (उस समय तक सार्व. सभा के भव्य भवन का बलात् अधिग्रहण नहीं किया गया था) आनन्द बाबू अपने कार्यालय में मिले और प्रसन्न हुए। उन्होंने बड़े आग्रह के साथ अपने दोपहर के भोजनार्थ टिफिन से हमें भोजन भी कराया। आर्य समाज के इतने उच्च पदस्थ व्यक्ति के इस शालीन और शोभन व्यवहार को क्या कभी भूला जा सकता है? आनन्द बाबू का सहयोग-आशीर्वाद सदैव सुलभ रहा है। आर्य समाज स्थापना समारोह दिल्ली में उन्होंने एक पत्र सम्पादक की हैसियत से मेरा नाम वक्ताओं में रखा भी। (हालांकि मैं अस्वस्थता के कारण नहीं पहुँचा)

एक अन्य घटना भी देखें- २७ सितम्बर, २०१७ ठा.विक्रम सिंह (राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण पार्टी) का जन्मदिवस था। ठाकुर साहब आर्य जगत के वह पहले व्यक्ति हैं, जिनका ध्यान लघु समाचार पत्रों की ओर गया और उन्होंने उन पत्र-सम्पादकों को सम्मानार्थ आर्य समाज मंदिर, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली में आमंत्रित किया- जो अपने समस्त परिवार के सहयोग से किसी पत्र का संचालन एवं प्रकाशन कर रहे हैं; इनमें 'आर्य लोक वार्ता' का नाम सर्वोपरि था। आने जाने का हवाई यात्रा का मार्ग व्यय (सहयोगी के साथ), सहायतार्थ धनराशि तथा अन्य बहुत सी उपयोगी सामग्री, जो आज तक काम आ रही है, ठाकुर साहब से हमें मिली और सबसे अधिक मिला वह आत्मीय प्यार-स्नेह जो उन्होंने प्रदर्शित किया।

ठाकुर विक्रम सिंह- २८ मार्च २०१८ को 'आर्य लोक वार्ता सम्मान समारोह' में मुख्य अतिथि के रूप में लखनऊ पधारे और उन्होंने लखनऊ के आर्य जनों में नवीन चेतना का संचार किया। यह सम्मान समारोह- रायउमानाथ बली प्रेक्षागृह, कैसरबाग, लखनऊ में आयोजित किया जाता है।

महाशय धर्मपाल जी, श्री आनन्द कुमार आर्य और ठा.विक्रम सिंह की स्मृतियों की शृंखला अभी पूरी भी नहीं हुई थी कि मेरी भेंट आर्य समाज चन्द्र नगर के साप्ताहिक सत्संग में ही वेदमित्र से हुई। कौन है यह वेद मित्र? बन्धुओं, यह वेदमित्र और कोई नहीं, आर्यसमाज चन्द्रनगर (आलमबाग) लखनऊ का एक सदस्य है। यह कोई लैंड डेवलपमेंट अथारिटी का एम.डी. नहीं है, किसी मेडिकल स्टोर का प्रोप्राइटर भी नहीं है, शास्त्री आचार्य या पी-एच.डी. की डिग्री भी इसके पास नहीं है। किन्तु यह वेदमित्र तो मेहनत मजदूरी करके बड़ी मुश्किल से दो जून रोटी दाल का जुगाड़ कर पाता है, यह नाम के अनुरूप वेदों का मित्र है, स्वाध्याय इसकी पूँजी है। प्रत्येक वर्ष जब मैं आर्य लोक वार्ता के लिए वार्षिक सहयोग की आर्य समाज चन्द्रनगर से अपील करता हूँ तो अति गरीबी रेखा से नीचे रहने वाला यह वेदमित्र सर्व प्रथम २५१ रुपये की राशि बड़ी श्रद्धा के साथ अर्पित करता है? कहाँ तो वे धनाधिप जो २१ वर्षों के बाद भी १००रुपये भी नहीं दे पाये; और अनेक आर्य सदस्य १००रुपये देने में भी हजार बार सोचते हैं। कहाँ यह वेदमित्र जो निर्धारित वार्षिक सहयोग राशि से ढाई गुना अधिक प्रति वर्ष दे रहा है! आर्य समाज के सत्संग में इसकी शतप्रतिशत उपस्थिति रहती है। जरूरत पड़ने पर शान्तिपाठ करता है और आर्य समाज के सत्संग के समापन पर शान्तिपाठ से लेकर जयघोष भी यही कराता है। क्या यह वेदमित्र हमारे प्रणाम और सम्मान का पात्र नहीं है? मन तो यही करता है कि अपनी सम्पूर्ण साधना इसी वेदमित्र के चरणों में अर्पित कर दूँ।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१९५

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में नवम समुल्लास का अंश

मुक्ति के साधन

पौराणिक लोग (सालोक्य) ईश्वर के लोक में निवास, (सानुज्य) छोटे भाई के सदृश ईश्वर के साथ रहना, (सारूप्य) जैसी उपासनीय देव की आकृति है वैसा बन जाना, (सामीप्य) सेवक के समान ईश्वर के समीप रहना, (सायुज्य) ईश्वर से संयुक्त हो जाना ये चार प्रकार की मुक्ति मानत हैं। वेदान्ति लोग ब्रह्म में लय होने को मोक्ष समझते हैं।

(उत्तर) जैनी (12) बारहवें, ईसाई (13) तेरहवें और चौदहवें समुल्लास में मुसलमानों की मुक्ति आदि विषय विशेष पर लिखेंगे। जो वाममार्गी श्रीपुर में जाकर लक्ष्मी के सदृश स्त्रियां, मद्य मांसादि खना पीना रंग राग भोग करना मानते हैं वह यहां से कुछ विशेष नहीं। वैसे ही महादेव और विष्णु के सदृश आकृति वाले पार्वती और लक्ष्मी के सदृश स्त्रीयुक्त होकर आनन्द भोगना, यहां के धनाढ्य राजाओं से अधिक इतना ही लिखते हैं कि वहां रोग न होंगे और युवावस्था सदा रहेगी। यह उनकी बात मिथ्या है क्योंकि जहां भोग वहां रोग और जहां रोग वहां वृद्धावस्था अवश्य होती है।

और पौराणिकों से पूछना चाहिये कि जैसी तुम्हारी चार प्रकार की मुक्ति है

वैसी तो कृमि कीट पतंग पाश्वादिकों की भी स्वतःसिद्ध प्राप्त है, क्योंकि ये जितने लोक हैं वे सब ईश्वर के हैं। इन्हीं में सब जीव रहते हैं इसलिये 'सालोक्य' मुक्ति अनायास प्राप्त है। 'सामीप्य' ईश्वर सर्वत्र व्याप्त होने से सब उसके समीप हैं इसलिए 'सामीप्य' मुक्ति भी स्वतःसिद्ध है। 'सानुज्य' जीव ईश्वर से सब प्रकार छोटा और चेतन होने से स्वतः बन्धुवत् है इससे 'सानुज्य' मुक्ति भी बिना प्रयत्न के सिद्ध है। और सब जीव सर्वव्यापक परमात्मा में व्याप्य होने से संयुक्त हैं इससे 'सायुज्य' मुक्ति भी स्वतःसिद्ध है।

और जो अन्य साधारण नास्तिक लोग मरने से तत्त्वों में तत्त्व मिलकर परम मुक्ति मानते हैं वह तो कुत्ते गदहे आदि को भी प्राप्त है। ये मुक्तियां नहीं हैं किन्तु एक प्रकार का बन्धन है क्योंकि ये लोग शिवपुर, मोक्षशिला, चौथे आसमान, सातवें आसमान, श्रीपुर, कैलास, वैकुण्ठ, गोलोक को एक देश में विशेष स्थान मानते हैं। जो वे उन स्थानों से पृथक् हो तो मुक्ति छूट जाय। इसीलिये जैसे 12 पत्थर के भीतर दृष्टि बन्ध होते हैं उसके समान बन्धन में होंगे! मुक्ति तो यही है कि जहां इच्छा हो वहां विचरे, कहीं अटके नहीं। न भय, न शंका, न दुःख होता है। जो जन्म है वह उत्पत्ति और मरना प्रलय कहा है। समय पर जन्म लेते हैं।

(प्रश्न) जन्म एक है वा अनेक?

(उत्तर) अनेक

(-क्रमशः)

वेदांजलि

तृतीयाश्रम (वानप्रस्थ) में प्रवेश में असमर्थ वृद्धों के कर्त्तव्य

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

अमाजुरश्चिद्भवथो युवं भगोऽनाशोश्चिदवितारापमस्य चित्।
अन्धस्य चिन्नासात्या कृशस्य चिद्युवामिदाहुर्भिषजा रुतस्य चित्।।
-ऋग्वेद 10/39/3

शब्दार्थ-

(नासत्या) कभी भी परस्पर असत्य, मिथ्या भाषण और अनुचित आचरण न करनेवाले (युवम्) तुम दोनों, अर्थात् पति-पत्नी (अमाजुरः) घर में वृद्धावस्था-पर्यन्त सहचारी बनकर (भगः भवथः) सर्वानन्दयुक्त जीवन व्यतीत करो [किन्तु कुछ आवश्यक कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए] यथा-, (अनाशोश्चित्) भूखे को अन्न दो, (अपमस्यचित्) निकृष्ट जघन्य दीनजनों को भी सहारा दो, (अन्धस्य च) नेत्रहीन की कठिनाई का भी समाधान करो, (कृशस्यचित्) दुर्बल और अशक्त के भी (अवितारा भवथः) रक्षक बनो, (युवाम्) तुम दोनों पति-पत्नी को लोग (रुतस्यचित्) रोग-पीड़ित को (भिषजा) चिकित्सा द्वारा (अवितारा) कष्ट निवारक (आहुः) कहते हैं।

व्याख्या-

ऋषि दयानन्द ने वैदिक सिद्धान्त को ध्यान में रखकर सारे मानव समाज को गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार चार वर्णों-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों में विभक्त किया। उसी प्रकार व्यक्ति के जीवन को चार आश्रमों-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास में बाँटा। इनमें से प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्य तो अनिवार्य है, किन्तु आगे के तीनों आश्रम ऐच्छिक और योग्यता-सापेक्ष हैं। प्रत्येक व्यक्ति अवश्य गृहस्थी बने, किन्तु वानप्रस्थ और संन्यासी बने-यह आवश्यक नहीं। योग्यता और क्षमता हो तो प्रसन्नता से इन आश्रमों में जावे, किन्तु पात्रता के बिना अग्रिम आश्रमों में जाना अपने और समाज के लिए हानिप्रद होगा। यद्यपि उत्तमता इसी में है कि अवस्था के अनुसार उस-उस आश्रम की योग्यता उपार्जित करे। किन्तु यदि कोई गृहस्थ वानप्रस्थ के उच्चादर्शों का निर्वाह नहीं कर सकता तो वह प्रसन्नता से गृहस्थ में रह सकता है। वेद कहता है कि इससे उसके निःश्रेयस में कोई बाधा नहीं है।

किन्तु उसे वार्धक्य में पाँच कर्त्तव्यों का पालन अनिवार्य रूप से करना है। 'भूखे को भोजन देना' मनुष्य का प्रथम कर्त्तव्य है। वेद से लेकर नीतिशास्त्रों तक सर्वत्र इसका वर्णन उपलब्ध है। ऋग्वेद के दशम मण्डल के एक सौ सत्रहवें सूक्त में इसी बात पर बड़े काव्यमय ढंग से अद्भुत प्रकाश डाला गया है-

न वा उ देवाः क्षुधमिद् वधं ददुरुताशितमुप गच्छन्ति मृत्यवः। उतो रयिः पृणतो नोपदस्यति, उतापृणन् मर्डितारन्न विन्दते।। *(ऋ 10/117/1)*

'प्रभु ने मरने के लिए केवल भूख ही नहीं दी है। जो खाते-पीते और गुलछर्रे उड़ाते हैं, मरते वे भी हैं। जो औरों का पेट भरने के लिए अपने साधनों का त्याग करते है। उससे उनका धन नष्ट नहीं हो जाता। किन्तु जो न देनेवाला है,वह कभी अपने किसी सुख देनेवाले को नहीं प्राप्त कर सकता।'

दूसरा कर्त्तव्य है-**'अपमस्य चित्'**- जो साधनों के अभाव में दुःखी हैं, जिनमें काम-काज करने की सूझबूझ तो है, किन्तु साधनों के अभाव के कारण कुछ कर नहीं पाते, ऐसे अभावग्रस्त व्यक्तियों को कुछ कारोबार के साधन जुटा देने चाहिएँ; शेष काम तो वे स्वयं कर लेंगे। मेरे परिचितों में कुछ परिवार ऐसे हैं, जो देश-विभाजन के पश्चात् साधनों के अभाव में खाने-पीने से भी तंग हो गये थे। यथा-तथा हाथ-पैर मार के वे सँभले और अब वे करोड़ों का कारोबार कर रहे हैं। ऐसे श्रमी और बुद्धिमान् व्यक्तियों को यथा-सामर्थ्य सहारा देकर आत्मनिर्भर बना देना चाहिए। यह भी समाज की महत्त्वपूर्ण सेवा है।

आगे तीसरा कर्त्तव्य है-**'अन्धस्य चित्'**- जो दृष्टि से वंचित हो गए हैं, उनके कष्ट को समझकर उनकी सहायता करना। संसार में दृष्टिहीन व्यक्ति की असमर्थता को भी आँखवालों को समझना चाहिए। आँख एक ऐसी इन्द्रिय है, जिसके अभाव में बुद्धिमान् व्यक्ति भी पराश्रित जो जाता है। ऐसे व्यक्ति तुम्हारी सहायता के पात्र हैं। मार्ग में चलते वे भटक रहे हों और आप ईश्वर की कृपा से साधन सम्पन्न हैं ओर कार में कहीं जा रहे हैं तो भटकते अन्धे की उपेक्षा मत करें। यदि आपके काम में विशेष बाधा न आवे तो उस नेत्रहीन को उसके अभीष्ट स्थान तक पहुँचा दें। इतना समय न हो तो भीड़भाड़-भरे मार्ग में सड़क पार ही करा दें। इतने से भी उस असहाय को बड़ा सहारा मिल जाएगा। अनेक व्यक्ति ऐसे हैं, जो थोड़े से उपचार से ही काम चलाऊ दृष्टि पा लेते हैं। ऐसों को खोज खोजकर उनके इलाज का प्रबन्ध कराना चाहिए। प्रभु ने यदि शक्ति दी हो तो ऑपरेशन आदि के कैम्प लगाने चाहिएँ। असमर्थों को चश्मे लगवाने में सहायता करनी चाहिए।

मंत्र में चौथी बात कही-**'कृशस्य चित्'**-जो पाप-रोगी हैं, अपंग हैं, कुष्ठादि व्याधियों से पीड़ित हैं, उनकी सहायता करना भी तुम्हारा पवित्र कर्त्तव्य है। वे बेचारे अपना कर्मफल तो भोग ही रहे हैं, किन्तु उस अवस्था में भी उनके कष्ट को कम करने के उपाय करते रहने चाहिएँ। इस दिशा में महात्मा गाँधी के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए। वे नियमित रूप से एक कुष्ठी के घावों की सफाई करके औषध लगाते थे। यह बहुत उच्च आदर्श का सेवाकार्य है। शास्त्रकारों ने बलिवैश्वदेव यज्ञ में पापरोगियों की सहायता का भी निर्देश किया है।

मंत्र में अन्तिम और महत्त्वपूर्ण पाँचवीं बात कही है-**'रुतस्य भिषजा अविता भवत'**-औषध का प्रबन्ध करके रोगी का कष्ट निवृत्त करो। कुछ रोग इस प्रकार के होते हैं जिनमें सामान्य व्यक्ति के लिए औषध का प्रबन्ध करना कठिन होता है। ऐसे व्यक्तियों की सहायता का भी सद् गृहस्थों को ध्यान होना चाहिए।

('श्रुति सौरभ' से साभार)

दयानन्द चरितामृतम्

-डॉ.गणेश दत्त शर्मा-

(प्रथमः सर्गः)

छन्द १-३

दयामयानन्दमयं विभुं प्रभुम्
परात्परं सर्वगतं चिदात्मकम्।
नमामिवागर्थ विकासकारकम्
भवेद् यथा मेऽर्थवती सरस्वती।।

मैं (गणेश दत्त शर्मा) दयामय, आनन्दमय, सर्वव्यापक परे से भी परे, सर्वतोगामी, चिद्रूप तथा वाणी एवं अर्थ का विकास करने वाले प्रभु को नमन करता हूँ, जिससे कि मेरी वाणी सार्थक हो।

अभूद्दयानन्दसरस्वती यती
ऋषिर्महानार्यमहमहासुतः।
समर्पितो वैदिकधर्मरक्षणे
स्वराष्ट्रप्राग्गौरववर्धने च यः।।

आर्यभूमि के महान् पुत्र महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती हुए जो कि वैदिक धर्म की रक्षा तथा अपने राष्ट्र के गौरव की वृद्धि के लिए समर्पित थे।

स वर्णिलिंगी धुरिकीर्तनीयताम्
गतः सदाचारविचारकर्मिणाम्।
श्रुतोपदेष्टाऽऽर्यसमाजनायकः
सदानुकार्योऽखिललोकलोकिभिः।।

वह ब्रह्मचारी सत्य आचार सद्विचार व सत्कर्म करने वालों में सर्वोच्च माने गए साथ ही वे वेदों के उपदेष्टा, श्रेष्ठ समाज के नायक तथा समस्त संसार के लोगों द्वारा सदा अनुकरणीय हुए।

('दयानन्द चरितामृतम्' से साभार, क्रमशः)

व्यक्ति-विशेष

सारस्वत चेतना के स्पंदनों से युक्त

डॉ. गणेश दत्त शर्मा

['आर्य लोक वार्ता' के विगत ११८ अंकों में प्रख्यात साम्यवादी विचारक, राजनेता (स्व.) आचार्य दीपंकर रचित 'दयानन्द चरितम्' संस्कृत काव्य का धारावाहिक प्रकाशन किया जाता रहा है। अप्रैल २०१६ अंक में ११८वें (अंतिम छन्द) के साथ इस ग्रन्थ का प्रकाशन पूर्णता को प्राप्त हुआ। इस ग्रंथ का आर्य जनता ने यथेष्ट सम्मान किया। 'दयानन्द चरितम्' पुस्तक तत्वज्ञ श्री पाल प्रवीण जी ने उपलब्ध कराई थी; उनके प्रति हम आभार प्रदर्शित करना अपना कर्तव्य समझते हैं। मई २०१६ से हम 'दयानन्द चरितम्' के स्थान पर 'दयानन्द चरितामृतम्' शीर्षक काव्य का धारावाहिक प्रकाशन वरेण्य विद्वान् डॉ.चन्द्र पाल शर्मा (पिलखुआ) के सुझाव और परामर्श को शिरोधार्य करते हुए करने जा रहे हैं। एतदर्थ हम 'दयानन्द चरितामृतम्' काव्य के प्रणेता डॉ.गणेश दत्त शर्मा के जीवन और साहित्य साधना का बिन्दुवार परिचय यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। यह प्रकाशन स्वाध्याय और लोकोपकार की दृष्टि से किया जा रहा है-सं.]

जन्म स्थान- भवन बहादुर नगर, बुलन्दशहर (उ.प्र.)
पिता- स्व.श्री पं.हरिशरण शास्त्री (स्नातक, गुरुकुल सिकन्दराबाद)
माता- स्व.श्रीमती अशर्फी देवी

शिक्षा-

गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर हरिद्वार; नानक चंद एँग्लो संस्कृत कॉलिज, मेरठ; श्री बिल्लेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, मेरठ।

उपाधियाँ-

विद्याभास्कर (गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर हरिद्वार), शास्त्री एवं साहित्याचार्य (सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी), एम.ए.(संस्कृत) तथा पी-एच.डी. (आगरा विश्वविद्यालय), राष्ट्रपति सम्मान से सम्मानित।

शिक्षा क्षेत्र में सेवाएँ-

लेक्चरर, रीडर एवं अध्यक्ष (एन.ए.एस.पी.जी. कॉलेज, मेरठ), प्राचार्य (लाजपतराय पी.जी.कॉलेज, साहिबाबाद), विजिटिंग प्रोफेसर (हिन्दू यूनिवर्सिटी ऑफ अमेरिका, फ्लोरिडा), निदेशक (आर.सी.सी.वी.पी.जी.कॉलेज, गाजियाबाद), सदस्य कार्यकारिणी, सदस्य विद्या परिषद्, चेयरमैन स्पोर्ट्स काउन्सिल एवं संयोजक पाठ्यक्रम समिति (मेरठ विश्व विद्यालय), मंत्री विधान सभा (गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर हरिद्वार), उपाध्यक्ष (दिल्ली संस्कृत अकादमी)

विदेश यात्राएँ-

फ्रांस (१९७७), जर्मनी (१९७९), हालैण्ड (१९८७), अमेरिका (१९९४, २०००, २००२, २००४), नेपाल (२००४), विश्व संस्कृत सम्मेलनों में भाग लिया एवं शोधपत्र प्रस्तुत किए।

प्रमुख रचनाएँ-

ऋग्वेद में दार्शनिक तत्त्व (शोधग्रन्थ, उ.प्र.संस्कृत अकादमी द्वारा पुरस्कृत), निबन्ध पारिजातम् (संस्कृत निबन्ध संग्रह), विवेकानन्द चरितामृतम् (संस्कृत महाकाव्य), दर्शनानन्दचरितामृतम् (संस्कृत खण्डकाव्य), स्वप्नवासवदत्तम्, वेदों में कृषि एवं आयुर्विज्ञान, वेदों में गणित एवं ज्योतिर्विज्ञान, वैदिक चिन्तन की धाराएँ।

(पृष्ठ 1 का शेष....)

प्रताप के प्रताप को....

रो रहा था। हाय, स्वतंत्रता के लिए इतनी कठोर तपस्या! इतनी कठोर यातना!

राष्ट्र-निर्माता! माँ के आँसुओं ने तुझे विदा दी, तू अपनी मातृभूमि छोड़कर चलने के लिए प्रस्तुत हो गया, तब तक तेरी दृष्टि भामाशाह पर पड़ी। उसको तूने भगवान् एकलिंग के आशीर्वाद के समान देखा। वह वृद्ध तपस्वी लकड़ी के सहारे आकर तेरे चरणों से लिपट गया और आगे अतुल सम्पत्ति रखकर बोला- महाराणा, प्राणों पर अधिक ममता न रहने पर भी तुझे देश के लिए जीना पड़ेगा, तुझे मेवाड़ नहीं छोड़ सकता, तेरे रोम-रोम से वह अपने सुखमय भविष्य की आशा रखता हैं जब तक तू इसका उद्धार नहीं कर लेगा, ऋण से मुक्त नहीं होगा, प्रताप! तू मेरी इस सम्पत्ति से वेतन-भोगी सैनिक एकत्र करके ऐसा हड़कम्प मचा दे कि सारा विश्व हिल उठे और मेवाड़ के कण-कण में तेरे प्रताप की ज्वाला जल उठे जिससे झुण्ड के झुण्ड शत्रु मेवाड़ छोड़कर भेड़ोंकी तरह भाग निकलें। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस बार तुम्हारी विजय-वैजयन्ती मेवाड़ के किले पर गर्व के साथ फहरायेगी। भामाशाह चुप हो गया लेकिन पहाड़ों की दरियों ने उसके कहे हुए शब्दों को दुहरा दिया। तेरे शरीर में बिजली दौड़ गई, जीवन में शक्ति आ गई, प्राणों में बल आ गया, आँखों में ज्योति आ गई और धूमिल चेहरा आशा से चमक उठा। तू ने कहा- "मन्त्रिप्रवर! यदि मुझे मेवाड़ नहीं छोड़ सकता तो मैं भी अब मेवाड़ को स्वतंत्र बनाकर ही छोड़ूँगा। वृद्ध मन्त्री की आज्ञा शिर पर है, यह सम्पत्ति ही मेवाड़ के भाग्य की उषा है। वृद्ध तपस्वी! मेवाड़ स्वतंत्र होकर रहेगा, जन्मभूमि स्वतन्त्र होकर रहेगी और प्रताप स्वतन्त्र होकर रहेगी, अब तेरे प्रताप को संसार की कोई भी शक्ति नहीं रोक सकती।" भामाशाह चला गया, उसके मुख पर एक प्रकाश था और हृदय में उल्लास।

मेवाड़-प्राण! स्वाधीनता के लिए सैनिक एकत्र होने लगे। वर्दियाँ बदल दी गईं, तलवारों पर पानी चढ़ गया, भाले-बरछों के मुरचे छुड़ा दिये गये, नये-पुराने समस्त हथियार युद्ध के लिए झनझना उठे। थोड़े ही दिनों में सिपाहियों की एक ठोस सेना तैयार हो गई।

मेवाड़-रक्षक! अपनी सशस्त्र टोली लेकर तूने बड़ी तीव्रता से देवीर पर आक्रमण किया। मेवाड़ के भाग्य का सूर्योदय हुआ और सारे मुगल मारे गये। किले पर मेवाड़ का झण्डा गड़ गया। तेरे शिर पर खून सवार था। तूने कुम्भलगढ़ पर चढ़ाई की और बीन-बीनकर एक-एक शत्रु को मार डाला। गढ़ पर विजय-वैजयन्ती फहरा उठी। इस तरह तेरी सेना आँधी की तरह बढ़ने लगी। तूने अपने शौर्यबल से थोड़े ही दिनों में एक-एक कर समस्त मेवाड़ पर अधिकार जमा लिया। दिशाओं में जय-निनाद गूँज उठा और निखिल सृष्टि तेरी कीर्ति-सुरभि से सुरभित हो उठी। मेवाड़ के एक-एक कण में आनन्द का महासागर लहर रहा था। बड़े समारोह के साथ देश के कोने कोने में विजयोत्सव मनाया गया। पेड़ों पर खग-कुल ने तेरे यश का गान किया, आकाश ने रात में मनौती के दीप बाले, सूर्य-चन्द्र ने आरती उतारी, पहाड़ों के झरनों ने अपनी कल-कल ध्वनि में तेरे गौरव की कहानी कहीं और सरिताएँ विजय-समाचार सुनाने के लिए सागर की ओर दौड़ पड़ीं।

(हल्दीघाटी की भूमिका से साभार)

होता सदस्य परिचय-61

सत्यार्थ प्रकाश से पाया सन्मार्ग

श्री रण सिंह

प्रथम 'आर्य लोक वार्ता-सम्मान' प्राप्त करने का श्रेय स्व.जगदीशलाल खत्री, भू.पू.प्रधान, आर्य समाज चन्द्रनगर (आलमबाग) लखनऊ को सन् २००४ में प्राप्त हुआ था। तत्कालीन आर्य सामाजिक परिदृश्य में श्री खत्री जी सर्वाधिक ऊर्जावान् आर्य पुरुष थे। अपने कार्यकाल में खत्री जी ने आर्य समाज चन्द्रनगर को आन्तरिक और बाह्य दोनों ही दृष्टियों से समृद्ध-सम्पन्न किया। आर्य समाज चन्द्रनगर का सुन्दर विशाल सभागार, जो बिना खंभे की सहायता से शोभायमान है, खत्री जी के कार्य कौशल का नायाब नमूना है। आसन्न मृत्यु का आभास उन्हें पहले ही हो गया था अतः उन्होंने ऐसी व्यवस्था की, कि उनके पश्चात् भी आर्य समाज चन्द्रनगर के कार्य में कोई शिथिलता न आये। फलतः उन्होंने अपने उत्तराधिकारी के रूप में जिस व्यक्ति का चयन किया था, उन्हीं का नाम है- श्री रण सिंह।

मन, वाणी, कर्म में एकत्व के उपासक श्री रण सिंह का जन्म जिला एटा कासगंज के नरसोली ग्राम में ४.०९.५५ को हुआ था। आपके पिता का नाम श्री केदार सिंह है। सिविल इंजीनियरिंग का डिप्लोमा करने के बाद श्री रण सिंह का सिंचाई विभाग में जूनियर इंजीनियर पद पर चयन हो गया और १३.०९.७८ से आपने सिंचाई विभाग में सेवाकार्य प्रारम्भ किया तथा ३०.०९.२०१५ को उक्त विभाग से ही सहायक अभियन्ता पद से सेवानिवृत्त हुए। २७-ए, नव मानक नगर, लखनऊ में आप सपरिवार निवास कर रहे हैं।

सफल परिवार

विचारों में दृढ़ श्री रण सिंह एक सुलझे हुए व्यक्ति हैं। श्रीमती केसरी देवी आपकी धर्मपत्नी हैं, जो परिवार का विधिवत संचालन करती हैं। श्री रण सिंह उन सौभाग्यशाली पिताओं में हैं; जिनकी संतानें सुशिक्षित और सम्पन्न हैं तथा अच्छे पदों पर तैनात हैं। आपके ज्येष्ठ पुत्र डॉ.पंकज सिंह के.जी.एम.यू. लखनऊ में असिस्टेंट प्रोफेसर (जनरल सर्जरी) हैं और पुत्रवधू डॉ.(श्रीमती) मेधावी सिंह भी के.जी.एम.यू. लखनऊ में असिस्टेंट प्रोफेसर (मेडिसिन) हैं। आपके दूसरे सुपुत्र डॉ.रवि सिंह बी.एच.एम.एस. स्वतंत्र प्रैक्टिस करते हैं।

सत्यार्थ प्रकाश से भेंट

श्री रण सिंह की आर्य समाज के सम्पर्क में आने की कहानी काफी रोचक और प्रेरक है। श्री रण सिंह को प्रथम नियुक्ति मोंठ, जिला झांसी (उ.प्र.) में मिली। एक दिन सन् १९८२ में आप बाजार में कुछ खरीदारी कर रहे थे तभी एक ऐसी घटना घटित हुई, जिसने श्री रण सिंह की जीवनधारा को ही बदल करके रख दिया। उस घटना का वर्णन उन्हीं के शब्दो में-

"सन् १९८२ में मैं सिंचाई विभाग के मोठ तहसील (झांसी जिला) में जू. इंजीनियर के पद पर कार्यरत था; एक दिन बाजार में कपड़ा खरीद रहा था, उसी समय आर्ष प्रचार ट्रस्ट, नई दिल्ली की प्रचार गाड़ी रुकी। उसमें रखी 'सत्यार्थ प्रकाश' पुस्तक पर मेरी दृष्टि पड़ी। 'सत्यार्थ प्रकाश' शब्द ने मुझे आकृष्ट किया कि इसमें कोई सत्य बातें अवश्य होंगी। मैंने तुरन्त शायद ढाई रुपये में पुस्तक खरीद ली और घर आकर तुरन्त पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। लगभग दो माह में मैंने पूरी पुस्तक पढ़ ली। उसके बाद मेरे दिमाग में जो भ्रान्तियां थीं वह काफी हद तक दूर हो गईं।"

आर्य समाज का रंग

आर्य समाज का रंग सत्य का रंग है। यह जब किसी के जीवन पर चढ़ता है, तो वह दिन ब दिन गहरा होता चला जाता है। श्री रण सिंह आर्य समाज के प्रभाव का हृदयग्राही वर्णन करते हुए लिखते हैं-

"२२ जून १९८२ में मैंने अपने पुत्र का जन्मदिन मोठ आर्य समाज के पुरोहित से कराया। उसी समय से प्रति रविवार आर्य समाज में होने वाले साप्ताहिक सत्संग में जाना प्रारम्भ कर दिया। वहाँ के आर्य समाज के सदस्यों और पदाधिकारियों का काफी प्यार और सहयोग मिलता रहा। आर्य समाज की यज्ञशाला के निर्माण में मैंने यथाशक्ति सहयोग किया।"

आर्य समाज चन्द्र नगर

सन् १९८६ में आपकी पदोन्नति एवं नियुक्ति लखनऊ में हुई। लखनऊ में आप आर्यसमाज चन्द्रनगर के सम्पर्क में आये। अनुकूल परिस्थितियों में यह स्नेह बंधन प्रगाढ़ होता गया। लखनऊ आगमन के उपरान्त आर्य समाज चन्द्र नगर से सम्बन्धों की मजबूती के अनुभवों को साझा करते हुए वे लिखते हैं-

"१९८६ में जब मेरा स्थानान्तरण लखनऊ हुआ तो आर्य समाज मोठ द्वारा मेरा विदाई समारोह बड़ी भव्यता के साथ आयोजित किया गया। लखनऊ आते ही मैंने तुरन्त ही आर्य समाज चन्द्रनगर में साप्ताहिक हवन एवं सत्संग में जाना प्रारम्भ कर दिया। यहाँ के तत्कालीन पदाधिकारियों श्री सोमदत्त बाधवा, नरेन्द्र मलिक आदि सभी ने मुझे स्नेह दिया। विशेष रूप से स्व.जगदीश लाल खत्री, स्व.महेन्द्रपाल मल्होत्रा समाज के कार्यों में कार्य करने के लिए प्रेरित करते रहे।"

आर्य लोक वार्ता

"श्री जगदीश लाल खत्री जी हमारे प्रेरणास्रोत बन गये थे। वे एक स्वाध्याय शील, निस्पृह व्यक्ति थे। उनका 'आर्य लोक वार्ता' के प्रति प्रगाढ़ प्रेम-स्नेह था। वे इस वैदिक पत्र को आर्य समाज का गौरव मानते थे। उन्हीं के चरणचिन्हों पर चलते हुए मैंने 'आर्य लोक वार्ता' और इसके प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य से सहयोग-संबन्ध बनाये रखा है। मेरा मानना है कि वर्तमान में आर्य समाज और वैदिक विचारधारा के प्रचार-प्रसार का 'आर्य लोक वार्ता' सर्वश्रेष्ठ माध्यम है।"

अक्षर लोक

स्वाध्याय, संयम और सेहत (लेख संग्रह)
संग्रह—सम्पादन : लक्ष्मण आर्य मुनि
प्रस्तुति : पुस्तिका/पृष्ठ संख्या ४४
मूल्य : पचास रुपये
प्रकाशक : विवरण व सम्पर्क अनुपलब्ध

'स्वाध्याय, संयम और सेहत' पुस्तिका में स्वाध्याय, संयम और सेहत से सम्बन्धित तथ्य और संक्षिप्त लेख संकलित कर प्रस्तुत किये गये हैं। पुस्तिका में स्वाध्याय और संयम की अपेक्षा सेहत की सेहत बहुत अधिक अच्छी है। कह सकते हैं कि पुस्तिका पर स्वाध्याय और संयम का नहीं 'सेहत' का ही कब्जा है। यूं सेहत से सम्बन्धित तथ्य और लेख अत्यंत उपयोगी हैं, जो इसे पठनीय और संग्रहणीय बनाते हैं। पुस्तिका में प्रकाशक का उल्लेख नहीं किया गया है। यह एक वैधानिक चूक है।

संस्कृति (स्मारिका)
सम्पादक : डॉ.सुरेन्द्र कुमार शर्मा, डॉ.सुशीला श्रीवास्तव, श्रीमती शैल बाला
प्रस्तुति : पेपरबैक टेक्टबुक साइज/पृष्ठ सं.१८०
मूल्य : अघोषित
प्रकाशक : सविता शर्मा, मंत्री
आर्य विरक्त (वानप्रस्थ संन्यास) आश्रम
ज्वालापुर—२४९४०७(हरिद्वार)

'संस्कृति' आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार द्वारा अपने इक्यानबेवें वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका है। इसमें महर्षि दयानन्द की विचारधारा, सिद्धान्त एवं मन्तव्य को उजागर करते ज्ञानवर्द्धक लेखन एवं अन्य रचनाएं संग्रहीत हैं। ग्रन्थ चार खण्डों में विभाजित है। प्रथम खण्ड में आर्य समाज की गौरव रही अनेक विभूतियों के 'व्यक्तित्व और कृतित्व' को दर्शाते हुए लेख हैं। द्वितीय खण्ड में 'वैदिक विचारमाला' के मनकों जैसे लेख हैं, जिन्हें बार-बार दुहराना अच्छा लगेगा। तृतीय खण्ड में 'स्फुट लेख' हैं। चतुर्थ खण्ड 'काव्य-प्रसून' में दस कवियों की रचनाएं संग्रहीत हैं। 'संस्कृति' स्मारिका के सभी लेख और कविताएं वैदिक संस्कृति की भली-भाँति व्याख्या करने में सक्षम हैं। इनसे आज की दशा और दिशा भी समझी जा सकती है। अनेक रंगीन चित्रों से सुसज्जित 'संस्कृति' स्मारिका अपनी संस्कृति के अनुरूप भव्य और मननीय-पठनीय-संग्रहणीय है।

शुभाकांक्षा

अप्रैल, २०१६ का अंक मेरे सामने

है। पं.शिवकुमार शास्त्री जी का 'श्रुति सौरभ' पठनीय और संग्रहणीय ग्रन्थ है। भगवान राम पर वाल्मीकि रामायण के आधार पर उनका विवेचन पढ़कर यह विदित होता है कि श्रीराम का चरित्र ही व्यवहार रूप में रामराज्य है। इस आधार पर ही अनेक परवर्ती ग्रन्थों में भी रामराज्य का वर्णन है। श्रीरामचरित मानस का 'रामराज्य और कलिकाल' वर्णन प्रबुद्ध पाठकों को पढ़ना चाहिए। इन पंक्तियों के लेखक ने इस शीर्षक से एक लेख बहुत पहले लिखा था, जो अनेक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ है और पुस्तक में भी संकलित है। 'आर्य लोक वार्ता' के पाठकों के आग्रह पर सम्पादक जी भी कभी उसे अपने पत्र में स्थान देंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। सम्पादकीय में सही बात का उल्लेख है कि कुछ परिवार अपने निन्दनीय स्वार्थ व वंशवाद को पल्लवित करने के लिए मोदी के विरोधी हैं। आप केवल उत्तर प्रदेश में विचार करके देखें कि एक दल माँ-बेटा-बेटी तक सीमित है, तो दूसरे में पिता-पुत्र ही सबकुछ है, तीसरे में अकेली बुआ जी थीं, अब भतीजा और आ गया है और चौथे में तो पिता, पुत्र, पुत्रवधू, भाई-भतीजा-पौत्रादि एक दर्जन प्रत्याशी हैं। भला सोचिये ये कभी परिवार के बाहर निकलकर देश की सोच सकते हैं? 'काव्यायन' में कुछ नये रचनाकार भी जुड़ने चाहिए। वैसे सभी रचनाएँ प्रभावी हैं। डॉ.वेद प्रकाश के जन्मदिन की बधाई के साथ मेरी शुभकामनाएँ भी हैं। भगवान् उन्हें शतायु करे-'अदीना स्याम शरदः शतम्' उनपर लागू हो, यह प्रार्थना है। मेरे पुत्र संजीव शर्मा के कुलपति बनने के समाचार में सम्पादक जी ने बी.एच.यू.में प्रोफेसर मेरी पुत्रवधू प्रो.निधि शर्मा, सी.सी.एस. वि.वि. में एसोसिएट प्रोफेसर मेरे एक और पुत्र डॉ.विकास शर्मा, सबसे छोटे पुत्र कुमार विश्वास और मेरे नाम का उल्लेख करके परिवार के कई सदस्यों का पत्रिका के पाठकों तक नाम पहुँचाया है, मेरे सम्मान का भी विस्तार से वर्णन किया है। यह मेरे ऊपर सम्पादक महोदय का विशेष स्नेह है। मैं कुछ और सदस्यों का नामोल्लेख करके पाठकों को अवगत कराना चाहता हूँ कि विकास की पत्नी डॉ.अमिता शर्मा, कुमार विश्वास की पत्नी डॉ.मंजु शर्मा भी क्रमशः पी.जी.कॉलेज व विश्वविद्यालय में कार्यरत हैं। एकमात्र पुत्री पी.जी.कॉलेज में (नाम-डॉ.वन्दना शर्मा) विभागाध्यक्ष है। परिवार में नौ सदस्य पी-एच.डी. हैं। डी.लिट. भी हैं।

-डॉ. चन्द्रपाल शर्मा
सहयोग, सर्वोदय नगर, पिलखुआ-245304

***

'आर्य लोक वार्ता' का अप्रैल २०१६ अंक उचित समय पर लम्बे अरसे बाद मिला। खुशी इस बात की है कि हमारे पोस्टमैन कभी कभी जग जाते हैं और अपने कर्तव्यों का सम्पादन करने लग जाते हैं। आशा है, डाक-वितरण की दिशा में उत्तरोत्तर सुधार होता जायगा।

'आर्य लोक वार्ता' का अध्ययन करने से नई चेतना का संचार होता है। आपका सम्पादकीय अग्रलेख 'चौकीदार नहीं, युगावतार' अत्यधिक विचारोत्तेजक और दिशादर्शक है। आपने यह बताने का प्रयास किया है कि स्वार्थी लोगों की एकता बड़ी जल्दी ही स्थापित हो जाती है और स्वार्थपूर्ति के बाद एक झटके में खत्म हो जाती है। मुखपृष्ठ पर प्रकाशित रामायण के प्रसंग को लेकर लेख हमारे समाज को नयी दिशा देता है और बतलाता है कि समाज की नींव परस्पर त्याग, सहयोग और बलिदान पर रखी जाती है। राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न के चरित्र ऐसे ही सुन्दर-स्वस्थ समाज के निर्माण में सहायक हैं। वेदमंत्र का काव्यानुवाद हमारे ज्ञान नेत्रों को खोल रहा है और नवीन धारावाहिक 'आर्य संस्कृति के मूल तत्त्व' तो अभूतपूर्व है। 'काव्यायन' की सभी कविताएँ मन पर प्रभाव डालती हैं।

-डॉ. सत्य प्रकाश
प्रकाश होम्यो हॉल, सण्डीला, जिला-हरदोई

***

आदरणीय सम्पादक जी, आशा है

सपरिवार सानन्द होंगे। आजकल देश में लोकसभा के निर्वाचन चल रहे हैं। नेताओं द्वारा एक दूसरे पर दोषारोपण व अपशब्दों का प्रयोग एक आम बात हो गई है। पाँच चरण के चुनाव हो चुके हैं। प. बंगाल में प्रायः सभी चरणों में हिंसा हुई है। ६ मई के चुनाव में तो टीवी संवाददाता की कार पर हमला करके उसे क्षतिग्रस्त कर दिया गया उसके सिर में गम्भीर चोट आई वह अस्पताल पहुँचाया गया। कैमरामैन का कैमरा तोड़ दिया गया उसे भी चोट आई। ऐसी अराजकता को देख कर कुछ पंक्तियां लिख गईं उन्हें 'विश्वास जन मत पर करो' शीर्षक से 'आर्य लोक वार्ता' में प्रकाशनार्थ भेज रहा हूँ।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'
हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ-226003

***

निष्काम योगी-अटल

मैं उन भाग्यशाली व्यक्तियों में हूँ जिन्हें

अटल जी जैसे महान व्यक्ति के दर्शन एवं उनसे वार्तालाप के अवसर अप्रयास प्राप्त हो गये। संयोगवश जब वह भारत के प्रधानमंत्री थे, उन्हीं दिनों मुझे उत्तर प्रदेश का पुलिस महानिदेशक नियुक्त किया गया। उन दिनों लखनऊ अटल जी का निर्वाचन क्षेत्र भी था, अतः उनका लखनऊ आगमन अनेक बार हुआ।

मेरा उनसे जीवन में पहली बार मिलना भी तभी अमौसी हवाई अड्डे पर हुआ, मुख पर हल्की सी स्मित के साथ वायुयान से उतरते हुए उन्हें देखकर सहजता से प्रकट हो जाता था कि वह आत्म विश्वास से परिपूर्ण सरल व्यक्तित्व के धनी हैं। उनसे अभिवादन के दौरान मैंने पाया कि किसी से मिलते समय उनके हाव-भाव से उनके साथ उस व्यक्ति का तादात्म्य स्थापित हो जाता था। उन्हीं दिनों उनकी ५१ कविताओं की पुस्तक चर्चित हुई, जिसकी निम्नांकित पंक्तियां उनके व्यक्तित्व की कुछ-कुछ झलक दे देती हैं-

पन्द्रह अगस्त का दिन कहता-
आजादी अभी अधूरी है।
सपने सच होने बाकी हैं,
राखी की शपथ न पूरी है।
जिनकी लाशों पर पग धर
कर आजादी भारत में आई,
वे अब तक हैं खानाबदोश,
गम की काली बदली छाई।।

आगरा में पाकिस्तान के राष्ट्रपति मुशर्रफ एवं अटल जी के बीच द्विपक्षीय वार्तालाप के समय आयोजित रात्रिभोज में मैं भी आमंत्रित था, वार्ता की विफलता लगभग स्पष्ट हो चुकी थी, परन्तु अटल जी के मुख पर विद्यमान निष्काम योगी का भाव अविस्मरणीय है।

-महेश चन्द्र द्विवेदी
1/137, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ

***

वाचनालय से

चरण स्पर्श : गंगा शरण आर्य

जब हम किसी विद्वान् या उम्र में बड़े व्यक्ति से मिलते हैं, तो उनका अभिवादन करते हुए, उनके चरण स्पर्श करते हैं। यह परम्परा भारतीय संस्कृति व सभ्यता की एक प्रतीक है। पैर छूने से बड़ों का आशीर्वाद ही नहीं मिलता बल्कि बड़ों के स्वभाव की अच्छी बातें हमारे अन्दर उतर जाती हैं।

पैर छूने का शारीरिक फायदा यह है कि इससे शारीरिक कसरत होती है। मानसिक लाभ यह है कि जिन लक्ष्यों की प्राप्ति को मन में रखकर बड़ों को प्रणाम किया जाता है, चरण स्पर्श करने से उस लक्ष्य को प्राप्त करने का बल मिलता है। बस, चरण स्पर्श करते समय इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि आप केवल उन्हीं के चरण स्पर्श करें, जिनके मनोभाव अच्छे हों, आचरण ठीक हो क्योंकि चरण स्पर्श और आचरण में सीधा सम्बन्ध है।

जब हम किसी बड़े के पैर छूते हैं और वो अपने हाथ हमारे सिर पर रखते हैं तो विद्युत-चुम्बकीय ऊर्जा का एक चक्र बन जाता है और उनकी ऊर्जा हमारे अन्दर प्रवाहित होने लगती है।

वैदिक धर्म में कहीं भी स्त्रियों के लिए पर-पुरुषों के चरण स्पर्श करना नहीं लिखा है। पुरुष पुरुषों के और स्त्री स्त्रियों के ही चरण स्पर्श करते पाये गये हैं।

(मासिक **'दयान्द सन्देश'**, दिल्ली से साभार)

क्या संस्कृत मातृभाषा है? : पं.गोकुल चन्द दीक्षित

इस समय बहुत से मनुष्य यह विचार कर रहे हैं कि किसी समय में संस्कृत भाषा भारतवर्ष की मातृभाषा थी, इसीलिए वेद ईश्वरीय ज्ञान न होकर उन लोगों के रचे हुए हैं, जो संस्कृत के धुरन्धर विद्वान थे। परन्तु, स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी प्रभावशाली वकृता एवं लेखों से इस बात को सिद्ध किया है कि संस्कृत कभी भी जनसाधारण की भाषा नहीं हुई।...इसी कारण संस्कृत भाषा में ईश्वर का वेदोपदेश करना किसी प्रकार का पक्षपात नहीं है।

यावत् कोई भाषा किसी देश विशेष की भाषा न मान ली जाय, तावत् वह मातृभाषा कहलाने के योग्य नहीं हो सकती। अतः स्वामी दयानन्ड की सम्मति में तो संस्कृत मातृभाषा नहीं।

सृष्टि के आदि से ही तीन प्रकार की भाषाएं होती हैं-एक, वैदिक अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान का भण्डार, दूसरी यौगिक संस्कृत और तीसरी प्राकृत (मातृभाषा) जब वर्तमान समय में किसी भी देश की भाषा संस्कृत नहीं है, तो मातृभाषा किस प्रकार हो सकती है?

आर्यावर्त के तो प्रत्येक भाग की भिन्न-भिन्न मातृभाषाएं हैं। थोड़े-थोड़े अन्तर में प्राकृत भाषा की सैकड़ों शाखाएं दिखायी देती हैं। संस्कृत अब भी विद्वानों की ही भाषा है।

(पाक्षिक **'आर्य जीवन'**, हैदराबाद से साभार)

धर्म की मर्यादा

गाँधी जी के बेटे मणिलाल एक बार बचपन में बहुत बीमार हो गये। डॉक्टर ने जाँच के बार कहा-'बच्चे को मीट का शोरबा देना पड़ेगा। अन्यथा इसकी हालत खराब हो सकती है।' बापू शाकाहारी थे। उन्होंने डॉक्टर से निवेदन किया कि वे शोरबे के बदले कोई और उपाय बताएं। डॉक्टर ने इस पर झुंझलाते हुए कहा-'बापू, आपके बच्चे की हालत बहुत खराब है, इस हालत में बच्चे के साथ आपको ऐसी सख्ती नहीं करनी चाहिए।'

गाँधी जी ने डॉक्टर को उत्तर दिया-'डॉक्टर होने के नाते आपने बच्चे के स्वास्थ्य के लिये जो उपाय बताया है, वह सही है, लेकिन मेरी जिम्मेदारी बहुत बड़ी है। यदि मणिलाल वयस्क होता तो मैं इसे इच्छानुसार खाने की आज्ञा दे देता। इसके अबोध होने के कारण इसके बारे में मुझे ही विचार करना है। प्राणों का संकट जा जाने पर भी धर्म को छोड़ा नहीं जा सकता। ऐसे ही समय में धर्म की परीक्षा होती है। मनुष्य को मांस नहीं खाना चाहिए, इसे मैंने धर्म माना है। मेरे धर्म की मर्यादा ऐसे समय में भी मांस खाने से रोकती है। अतः मणिलाल को मैं शोरबा नहीं दूंगा। उसकी सिर्फ जलचिकित्सा करूंगा।'

और गाँधी जी की जलचिकित्सा से मणिलाल कुछ ही दिनों में स्वस्थ हो गये।

(मासिक **'शान्तिधर्मी'**, जीन्द से साभार)

आर्यों का प्रसार : डॉ.सुरेन्द्र कुमार

ब्राह्मण उपनिषदों, रामायण, महाभारत, पुराण आदि ग्रन्थों में आर्यों के इतस्ततः प्रव्रजन के कारण और वर्णन मिलते हैं। प्रजापति कश्यप की पत्नी दिति उत्पन्न पुत्र 'दैत्य कहलाये, अदिति से उत्पन्न 'आदित्य' और दनु से उत्पन्न 'दानव' कहलाये। सभी देव थे। 'दैत्य' अपने लिये 'असुर' विशेषण का प्रयोग गर्व से करते थे। देवासुर संग्राम में देवों की विजय हुई। 'असुरों' ने प्रव्रजन करके नई बस्तियां बसाईं। 'जेन्दावस्ता' में उन सोलह शुभ देशों का वर्णन मिलता है, जिन्हें असुरों ने बसाया।

आर्यों की ईरानी शाखा के उक्त प्रव्रजन के समान आदित्यवंशी देवों अथवा मनुवंशियों ने भी हिमालय से उतर कर चारों दिशाओं में प्रव्रजन किया। मध्य एशिया और यूरोप तक आर्य बस्तियों का विस्तार हुआ।

(मासिक **'परोपकारी'**, अजमेर से साभार)

धारावाहिक-4 कालजयी रचना

आर्य-संस्कृति के मूल तत्त्व

-डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार-

आर्य संस्कृति का केन्द्रीय विचार

(गतांक से आगे)...द्वैत मानें, अद्वैत मानें, आस्तिकवाद मानें, नास्तिकवाद मानें- आर्य संस्कृति की घोषणा है कि जब प्रत्येक व्यक्ति को संसार किसी-न-किसी दिन छोड़ना है, तब संसार में रमे रहना, इसी के भोग में लिप्त रहना किसी का अन्तिम लक्ष्य नहीं हो सकता। सुख तो नास्तिक-से-नास्तिक भी चाहता है। संसार को भोगने में सुख है, परन्तु इन भोगों में लिप्त रहने में सुख नहीं। जीवन का वही मार्ग सुख देने वाला है जिससे मनुष्य संसार को भोगता हुआ भी उसमें लिप्त न हो--'एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे'। जब अन्तिम सत्ता इसकी नहीं, उसकी है, विश्व की नहीं, विश्वात्मा की है, तब निर्लेप, निस्संग, निष्काम-भाव से संसार में रहना--यही तो जीवन का एकमात्र लक्ष्य रह जाता है। इस विचार में संसार को बिल्कुल त्याग देने का, जंगल में भाग जाने का भाव नहीं है। आर्य संस्कृति यथार्थवादी संस्कृति है। संसार जो कुछ दिखाई देता है वह उसे वैसा मानती है, उसकी सत्ता को पूरी तरह से स्वीकार करती है। यह संसार हमारे भोगने के लिए रचा गया है। यह इसलिये नहीं रचा गया कि इसे देखकर हम आँख मूंद लें, इससे भाग खड़े हों। आर्य-संस्कृति का मौलिक विचार यह है किक संसार तो भोगने के लिये ही रचा गया है, इसे भोगो, परन्तु भोगते-भोगते इसमें इतने लिप्त न हो जाओ कि अपनी सुध-बुध ही भुला दो, अपने आपे को इसी में खो दो। संसार को भोगो, परन्तु त्याग पूर्वक, संसार में रहो, परन्तु निर्लिप्त होकर, निस्संग होकर, इसमें रहते हुए भी इसमें न रहने के समान, पानी में कमल दल की तरह, घी में पानी की बूँद की तरह! यह सब इसलिये, क्योंकि यथार्थवादी दृष्टि से जैसे संसार का होना सत्य है वैसे यथार्थवादी दृष्टि से ही संसार का हमसे छूटना भी सत्य है। 'भोगना' और 'त्यागना'--इन दोनों सत्यों का सम्मिश्रण संसार की और किसी संस्कृति में नहीं है, सिर्फ आर्य-संस्कृति में है। अन्य संस्कृतियां इन दोनों में से सिर्फ एक सत्य को ले भागी हैं। कोई त्यागवाद को ले बैठी है, कोई भोगवाद को; किसी ने प्रकृतिवाद को, भौतिकवाद को जन्म दिया, किसी ने कोरे अध्यात्मवाद को। भोग और त्याग का समन्वय, भौतिकवाद और अध्यात्मवाद का मेल सिर्फ आर्य-संस्कृति में पाया जाता है, और यही इस संस्कृति का आधार-भूत मौलिक विचार है।

हम पहले ही कह चुके हैं कि संसार की महान् संस्कृतियां किसी केन्द्रीय विचार का विकास होती हैं। यह विचार जितना प्रबल होगा, उतनी ही वह संस्कृति बलवती होगी, उसे विचार के वेग को अपने विकास में प्रकट कर सकेगी; जितना यह विचार निर्बल होगा, उतनी ही वह संस्कृति भी निष्प्राण-सी, निर्बल-सी होगी। जो संस्कृति जीवित रहना चाहती है उसके लिये यह आवश्यक हो जाता है कि वह अपने आधार-भूत मूल-विचार के वेग की प्रबलता को बनाये रखे। उसके लिये यह भी आवश्यक हो जाता है कि उस विचार की प्रबलता के साथ-साथ उस विचार की धारावाहिकता को भी कायम रख सके। यह न हो कि आज यह विचार आँखों के सामने आया, कल लुप्त हो गया। आज क्या, और कल क्या, एक पीढ़ी क्या, और दस पीढ़ियाँ क्या, उस जाति के चढ़ाव के दिन क्या, और उतराव के दिन क्या--यह विचार उस जाति का श्वास-प्रश्वास हो, जीवन-मरण हो, और उस जाति के धारावाहिक जीवन में धारावाहिक रूप से बना रह सके। जो जाति अपने जीवन में अपनी संस्कृति के आधारभूत केन्द्रीय-विचार को इस प्रकार जागरूक रख सकती है, उस जाति में समय-समय पर ऐसे व्यक्ति प्रकट होते रहते हैं जिनका जीवन उस केन्द्रीय-विचार का प्रतीक होता है, मूर्त-रूप होता है, जिनके जीवन में उस केन्द्रीय-विचार को हम उतरा हुआ देख सकते हैं। संस्कृति का बल बढ़े, उसमें वेग दिखाई दे, और हमारी संस्कृति का केन्द्रीय-विचार व्यक्ति व्यक्ति में, सबमें नहीं तो किसी एक ही व्यक्ति में हमें मूर्त-रूप में दीख पड़े--इसके लिये उस केन्द्रीय-विचार की प्राण-प्रतिष्ठा करते रहने की, उसे सबल बनाने की आवश्यकता है, वह जितना सबल होगा उतना ही वह देश में, जाति में, और देश-जाति के स्त्री-पुरुषों के जीवन में उतरता हुआ दीख पड़ेगा।

भारतीय-संस्कृति के जिस मूल केन्द्रीय-विचार का हमने उल्लेख किया वह यहां के व्यक्तियों, और यहां की जाति के जीवन को प्रभावित करता रहा है। हमारी जाति इतिहास में अनेक प्रकार की उथल-पुथल में से गुजरी। इसके चढ़ाव के दिन भी आये, उतराव के दिन भी आये, परन्तु हमारी संस्कृति का केन्द्रीय-विचार कम-अधिक रूप में सदा इस जाति का मार्ग-प्रदर्शन करता रहा। समय था जब हमने इसी केन्द्रीय-विचार का विकास करते-करते अपने सामाजिक संगठन का निर्माण किया था। समय था जब इसी केन्द्रीय-विचार को लेकर हमने संसार भर को अपने विचारों में दीक्षित किया था। ऐसा भी समय आया जब हम संसार के इतिहास के पन्नों से मिट-से गये। उस समय राख के नीचे दबी आग की तरह हमारी संस्कृति अपने केन्द्रीय-विचार को लेकर धीमे-धीमे सुलगती रही, परन्तु क्योंकि उसे फिर से प्रचंड ज्वाला का रूप धारण करना था, फिर से अन्धकार में हाथ टटोलते पथ-भ्रष्ट विश्व का मार्ग-प्रदर्शन करना था इसलिये वह नष्ट नहीं हुई। आज फिर हमें अपनी संस्कृति के केन्द्रीय-विचार को लेकर पहले अपने देश का नवनिर्माण करना है, फिर विश्व को अपनी संस्कृति का संदेश सुनाना है। हमारी संस्कृति के केन्द्रीय-विचार में वह बल है या नहीं कि अपने देश का नव-निर्माण कर सके, या विश्व-शांति का वह सन्देश संसार के सम्मुख रख सके जिसके लिये आज प्रत्येक देश व्याकुल हो रहा है--आज भारत अपने भविष्य का निर्माण करने जा रहा है। भारत जो कुछ बनेगा, उसका संसार के भविष्य पर भारी प्रभाव पड़ने वाला है। भारत का भविष्य, भारत के भूत-काल की विचार परम्परा को तोड़कर, सैकड़ों और हजारों वर्षों की ऋषि-मुनियों की तपस्या को नगण्य समझकर नहीं बनाया जा सकता। हम जिस नवीन रचना का निर्माण करने लगेंगे, कोई-न-कोई उस रचना से मेल खाने वाला प्राचीन विचार उस रचना को आकर झांकने लगेगा, उस रचना में अपनी पुट देने लगेगा। हम अपने देश की प्राचीन संस्कृति के बिना एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते, और उस संस्कृति को समझने के लिए उसके 'केन्द्रीय-विचार' को समझे बिना आगे कदम नहीं रख सकते।

('आर्य संस्कृति के मूलतत्त्व' ग्रंथ से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला-1

दयानन्द और विवेकानन्द

-स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती-

विवेकानन्द-एक युवा ऐथलीट

मुझे आर्य प्रतिनिधि सभा, दक्षिणी अफ्रीका द्वारा १५ से २७ दिसम्बर तक डर्बन में तथा पीटरमैरिट्जबर्ग में २१ से २२ दिसम्बर १९८५ में होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय वेद सम्मेलन में विचार-विमर्श के लिये आमंत्रित किया गया था। दक्षिणी अफ्रीकी गणराज्य में आर्य समाज के अतिरिक्त तीन और क्रियाशील आन्दोलन कार्यरत हैं।

(१) शिवानन्द मिशन-इसके आजीवन प्रेरणादायक स्वामी सहजानन्द जी हैं।

(२) रामकृष्ण मिशन-पहले इसे स्वामी निःश्रेयसानन्द का आशीर्वाद प्राप्त था- वे अब रोडेशिया में रह रहे हैं। दूसरे इसके संस्थापक-अध्यक्ष डी.सी. नायडू (बाद में स्वामी निश्चलानन्द) और वर्तमान में इसके अध्यक्ष स्वामी शिवपादानन्द हैं जो इसके आध्यात्मिक अध्यक्ष भी हैं।

(३) हरेकृष्ण आन्दोलन-

रामकृष्ण मिशन के अधिकारियों ने मुझसे पूछा कि क्या मैं स्वामी विवेकानन्द के जन्म दिवस के अवसर पर ११ जनवरी १९८६ को रामकृष्ण मिशन में भाषण दे सकता हूँ? मैंने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। मैंने उक्त तिथि को सायं भाषण भी दिया। मैंने स्वामी विवेकानन्द(१८६३-१९०२) के विषय में वहाँ क्या कहा और क्या पढ़ा था, इसे अपने लोगों के लाभार्थ मैं यहाँ प्रस्तुत करना चाहता हूँ।

१. तथाकथित हिन्दुओं को इतना अवश्य समझ लेना चाहिये कि स्वामी विवेकानन्द उन्हें हर प्रकार के अन्ध विश्वास से मुक्त रखना चाहते थे। वे फलित-ज्योतिष, हस्तरेखा, अच्छे और बुरे शकुन आदि-आदि के विरुद्ध थे।

२. स्वामी विवेकानन्द हिन्दुओं को मूर्ति-पूजा से बचाना चाहते थे। कितनी ही बार उन्होंने कर्मकाण्ड के प्रति अपना रोष प्रकट किया था।

३. वह हिन्दुओं को अकर्मण्यता से बचाना चाहते थे, वे चाहते थे कि आज के प्रगतिशील युग में देश का स्तर ऊँचा उठाया जाये।

४. वे हिन्दुओं को जाति-पाँति से ऊपर उठने को कहते थे।

५. अस्पृश्यता का विचार उनके लिये बड़ा ही घृणास्पद था।

६. वे चाहते थे कि हिन्दू विचारों की दृष्टि से उदार बनें।

जब तक हिन्दू अपने इन दोषों का परित्याग नहीं करेंगे तब तक वर्तमान प्रगतिशील समाज में उनके लिये कोई स्थान नहीं होगा। वे जड़ आध्यात्मिकता में विश्वास नहीं करते थे। वे एक प्रगतिशील व्यक्ति थे। कितनी ही ऐसी बहुत सी बातों में वे स्वामी दयानन्द (१८२५-१८८३) के निकट थे। परन्तु फिर भी दयानन्द, दयानन्द ही हैं, निश्चय ही विवेकानन्द से बहुत ही भिन्न हैं।

विवेकानन्द एवं उनका व्यक्तित्व

स्वामी विवेकानन्द के शारीरिक सौष्ठव के सम्बन्ध में रोमां रोलाँ लिखते हैं-

"उनकी बलिष्ठ काया रामकृष्ण की दुर्बल एवं कोमल परन्तु दृढ़ काया की अपेक्षा मजबूत थी। वह लम्बे (पांच फीट आठ इंच) थे। उनके कन्धे बड़े पुष्ट, वक्षस्थल चौड़ा, हृष्ट-पुष्ट शरीर, उनकी मांसल बाहें, मानो हर प्रकार के खेल के उपयुक्त थीं।"(The Life of Vivekanand and Universal Gospal-P.2. Prelude)

विवेकानन्द १८९३ में शिकागो में होने वाली धर्मसभा में भाषण देने के बाद ही प्रसिद्धि को प्राप्त हुये। उनका पहला भाषण ११ सितम्बर, १८९३ को हुआ था। ४ जुलाई, १९०२ में ३९ वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई। उनका सक्रिय जीवन केवल ८ वर्ष का ही रहा। विवेकानन्द को मधुमेह की बीमारी थी, और हमें बताया गया है कि उनका यह रोग निरन्तर बढ़ता ही गया और अन्त में वे जलोदर से ग्रस्त हो गये। उनके पैर सूज गये थे और उनके शरीर के कुछ अंग अति संवेदनशील हो गये थे। अपने जीवन के अन्तिम समय में २१ दिनों तक वे एक बूँद पानी भी नहीं पी पाते थे। इस सन्दर्भ में उन्होंने घोषणा की थी-

"शरीर मन का यन्त्र है। जैसा भी मन कहेगा शरीर करेगा। अब मैं पानी के विषय में सोचता भी नहीं हूँ, अतः मुझको इसका अभाव भी प्रतीत नहीं होता।"

मधुमेह के लक्षण सबसे पहले उनकी किशोर अवस्था में-जब वे सत्रह या अठारह वर्ष के ही थे-प्रकट हो गये थे। भारत में रहते समय उन पर कई बार मलेरिया के भीषण हमले हुये। एक बार अपनी यात्रा के दौरान वह प्रायः मर ही गये थे, जब वे कण्ठ रोग से ग्रस्त थे। उन्होंने बहुत अधिक यात्राएँ की थी और वह भी बहुत कम कपड़ों में तथा भूखे पेट।

विवेकानन्द इंग्लैण्ड में तीन बार ठहरे-(१) १८९५ में सितम्बर से नवम्बर के अन्त तक (२) १८९६ में अप्रैल से जुलाई के अन्त तक और (३) १८९६ में ही अक्तूबर से दिसम्बर तक।

इंग्लैण्ड के सम्बन्ध में उनके अपने विचार देखिये-"कोई भी अंग्रेजों के प्रति इतनी घृणा लेकर इंग्लैण्ड में नहीं गया होगा, जितना कि मैं। और अब मुझे उनके प्रति जितना प्यार है उतना तुम में से किसी को भी नहीं होगा।"

इंग्लैण्ड ने स्वामी विवेकानन्द को तीन शिष्य दिये-जे.जे.गोडविन, मार्गरेट नोबल एवं मि.सेवियर। गोडविन उनके पास १८९५ के अन्त में एक आशुलिपिक के रूप में आये। मार्गरेट नोबल को सब सिस्टर निवेदिता के रूप में जानते हैं। वह लन्दन के एक स्कूल में प्रधान अध्यापिका थी। विवेकानन्द ने उनके स्कूल में भाषण दिया, और वह उसी समय उनसे अत्यंत प्रभावित हुईं। सेवियर ४९ वर्षीय एक सेवानिवृत्त कप्तान थे। विवेकानन्द का एक भाषण सुनने के बाद वह एवं उनकी पत्नी दोनों स्वामी जी के शिष्य बन गये। वास्तव में उन दोनों के मन में धर्म संबन्धी बहुत सारे प्रश्न उमड़ रहे थे। विवेकानन्द में उन्हें उन सबका समाधान दिखाई पड़ा। उन्होंने उन्हें अपना गुरु मान लिया।

संयुक्त राज्य अमेरिका में हिन्दू विचारों का परिचय

रोमां रोलाँ ने विवेकानन्द पर अपनी पुस्तक में स्वामी विवेकानन्द के प्रथम दौरे के समय अमेरिका की क्या दशा थी, इस पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। अमेरिकन लोग पहले ही १८७५-७६ में स्वामी दयानन्द के प्रादुर्भाव के विषय में जान चुके थे। (रोमां रोलाँ ने इस तथ्य को नजर अन्दाज किया है) कर्नल अल्काट और

मैडम ब्लैवेट्स्की ने इस महान भारतीय सपूत से सम्पर्क किया था और इन्हें थियोसोफिकल सोसाइटी का अध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव किया था। स्वामी दयानन्द, अमेरिका एवं यूरोप में वेदों का सन्देश पहुँचाने के लिए अति उत्सुक थे। अमेरिका में अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने कर्नल अल्काट एवं उनके साथियों से पत्र-व्यवहार किया था। यूरोप में अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये स्वामी जी ने प्रो.मैक्समूलर एवं अपने ही शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा से पत्र-व्यवहार किया था। रोमां रोलाँ लिखता है-

ऐसा प्रतीत होता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में हिन्दू विचारों का परिचय करने वाले व्यक्तियों में प्रमुख नाम एमर्सन है और वह थोरो से प्रभावित था। एमर्सन ने इस सम्बन्ध में कुछ लेख लिखे और १८३८ में हावर्ड विश्वविद्यालय में कुछ (शोध) पत्र पढ़े। १५ जुलाई, १८३८ में उन्होंने डिवाइनिटि कॉलेज, कैम्ब्रिज की सीनियर कक्षा के विद्यार्थियों के सामने भाषण दिया। इस भाषण में उन्होंने कुछ हिन्दू धर्म-ग्रन्थों का सन्दर्भ दिया। उन्होंने आत्मा, ब्रह्म, योग, कर्म एवं भक्ति पर कुछ अस्पष्ट विचार प्रकट किये। वहाँ उस समय एक अन्य व्यक्ति भी उपस्थित था जिसका नाम वाल्ट व्हिटमैन था। उसकी मृत्यु २६ मार्च, १८९२ को हो गई। एडगर ऐलन पो ने अपने पत्र 'यूरेका' में १८४८ में कुछ उपनिषद् सम्बन्धी विचार प्रकाशित किये। व्हिटमैन के 'लीव्ज ऑफ ग्रास' नामक लेख में भगवद्गीता और द न्यूयार्क हैराल्ड के मिले जुले विचार थे। हमारे पास प्रमाण हैं कि स्वामी विवेकानन्द ने 'लीव्य आफ ग्रास' को भारत में पढ़ा और व्हिटमैन को एक 'अमेरिकन संन्यासी' कहा।

जुलाई १८९५ तक अमेरिका में स्वामी विवेकानन्द ने अपने गुरु रामकृष्ण के विषय में कुछ नहीं कहा। जुलाई १८९५ में उन्होंने प्रथम बार सेण्ट लारेंस नदी के किनारे थाउजैण्ड आइलैण्ड पार्थ में एक भाषण के दौरान उनका जिक्र किया। २४ फरवरी, १८९६ को न्यूयार्क में अपने भाषणों के क्रमों का समापन उन्होंने एक बहुत सुन्दर भाषण, जिसका शीर्षक 'मेरे गुरु' था से किया। परन्तु उन्होंने इसे प्रकाशित करने की आज्ञा नहीं दी।

विवेकानन्द के अन्तिम दिन

विवेकानन्द को पता था कि उनका स्वास्थ्य गिर रहा है। मधुमेह एक बहुत ही विनाशकारी रोग है। १९०० में तो यह और भी विनाशकारी था, क्योंकि तब तक इनसुलीन का आविष्कार नहीं हुआ था, कुनैन की खोज करने से पहले मलेरिया भी ऐसा ही था। सर रौनाल्ड रोस धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने कुनैन की खोज की। उनका जन्म अल्मोड़ा, भारत में हुआ था और मृत्यु मे लंदन में हुई थी। वे एक ब्रिटिश चिकित्सक एवं कीटाणु विशेषज्ञ थे। मलेरिया का कारण- एनोफ्लीज मच्छर पर उन्होंने शोध कार्य किया। इसके लिए १९०२ में उन्हें नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ।

('ज्ञान सुधा' से, क्रमशः)

काव्यायन

धार पर जो खड़े थे

❑मधुकर गौड़

धार पर जो खड़े थे वो धार में ही बह गये
घर जो मिट्टी के बने थे आँधियों में ढह गये

अहं जिनका व्यर्थ में आकाश था
शान से उनको मिला वनवास था
ना इधर के ना उधर के तीन तेरह रह गये

उनकी चालाकी बड़ी मशहूर थी
श्रेष्ठता मुझसे बहुत ही दूर थी
किन्तु बरगद की तरह जो मौन थे
हर विकट तूफान को वो सह गये

दूसरों के नाम अपयश लिख रहे
कौड़ियों के भाव में वो बिक रहे
याद उनकी ही सदा ताजी रही
बोल मीठे जो कभी कुछ कह गये

('शब्दायन' से, साभार)

विश्वास जनमत पर करो

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

कितना घृणित अब हो गया आचरण हाय! समाज का।
मीडिया कर्मी भी न रक्षित रह गया है आज का।।
हैं कार तोड़ी जा रहीं, संवाददाता पिट रहा।
कैमरा-चालक भी हमारा, चोट देखो खा रहा।।

मतदान का यह दिवस कैसा दिख रहा है सामने।
जो देख सज्जन पुरुष का भी हृदय लगता काँपने।।
डण्डे तथा लाठी चला पत्थर कोई बरसा रहा।
बंगाल में देखो 'दयानन्द' हाय! यह क्या हो रहा।।

सौहार्द संयम शान्ति को दे दी तिलांजलि है गई।
विश्वास सेना पर न कर, हा प्रश्न करते हैं कई।।
मुद्दे गये सब भाड़ में, बस दोष आरोपण करें।
हर सोचता पाकर विजय, निज जेब को अपनी भरें।।

प्रिय! सोचिये निज देश का किस भांति से कल्याण हो।
किस भांति निर्धन, कृषक, युवा वृद्धजन का त्राण हो।।
बेकार आपस में ही लड़ना, काम अच्छा है नहीं।
विश्वास जन मत पर करो, कहते दयानन्द हैं यही।।

–'चन्द्रा मण्डप', 370/27, हाता नूरबेग, संगमलाल वीथिका, सआदतगंज, लखनऊ–3

भक्ति प्रसून

❑रामा आर्य 'रमा'

तू ही अज अद्वैत प्रभु, तू ही है सर्वेश।
तू ही है तो बंधु गुरु, तू ही सखा प्रजेश।।
ईश प्राप्त सबको सदा, 'रमा' वेद की नीति।
पर सदोष अन्तःकरण, करता नहीं प्रतीति।।
शाश्वत जग में ओम है, परमपिता का नाम।
जपे नाम निशिदिन 'रमा', प्रेम भाव निष्काम।।
'रमा' ओम के नाम से, गुंजित सारा व्योम।
प्राणी तू रस पान कर, सदा प्रेम रस सोम।।
ईश्वर को मत भूलिए, उसको रखिए याद।
सुनता है सबकी 'रमा', वही एक फरियाद।।
होती रहती जब 'रमा', प्रभु की कृपा महान।
कीर्ति मिले जग में सदा, मिलता गौरव मान।।

('रमा सतसई')

–417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

प्रेम से

❑डॉ. कैलाश निगम

सर्जना के हेतु
नयी क्रान्ति चाहिए परन्तु
तोड़-फोड़, अवरुद्धवाद
नहीं चाहिये।
जिसको विरोधी देखा
उसे जेल भेज दिया
सत्ता स्वार्थ का
निरुद्धवाद नहीं चाहिये।
मानव के हेतु हम
मानव समग्र बनें
सिक्ख, जैन या कि
बुद्धवाद नहीं चाहिये।
प्रेम से है जीतना
समस्त मानवों का मन
तोप, तलवार, युद्धवाद
नहीं चाहिये।।

■ ■ ■

सत्य का प्रकाश दे
अहिंसक बनाओ और
हिंसक प्रवृत्तियों को
ठौर नहीं दीजिये।
समता की भावना से
सबको लगाओ कण्ठ
जाति-धर्म-वर्ग पर
गौर नहीं कीजिये।
सभी अपने हैं
जो स्वदेश में करें निवास
घृणा का बना के कभी
घोल नहीं पीजिये।
भाई-भाई खेल में
झगड़ लेते हैं परन्तु
इन्हें आप शत्रु के
बतौर नहीं लीजिये।।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

धर्मरथी

❑डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'

बोल उठे देव-मुनि, देख त्रस्त जटाजूट
अंशुमालिप्रभ प्रभु भाल-अजधाम को।
ताप-त्रयहरी भ्रू-विलास सुखकारी संग
करुणा-कलित रक्त-लोचन-ललाम को।
समरस-सस्मित सुमुख-शरदाम्बुज को
सानुज बज्रांग वीर, नीरधर-श्याम को।
कोटिक प्रणाम बाण-धनुष-तूणीरधर
रावणारि राम धर्मरथी छविधाम को।।

'जय-जय धर्मरथी' महा-रव गुंजरित
तीनों लोक प्रमुदित मोद का न वार पार।
देव-यक्ष-किन्नर-गन्धर्व-अप्सरा-महर्षि-
नाग-नर-वानरों का जयोच्चार बारंबार।
किन्नर-गन्धर्व सभी नृत्य-गान में प्रमत्त
अन्तरिक्ष से अपार बरसी सुमन धार।
धर्म की अधर्म पर, सत्य की असत्य पर
जीत हुई, मिटा अत्याचार अघ-अन्धकार।।

–78, त्रिवेणी नगर–1, लखनऊ–20

कालजयी काव्य

हल्दीघाटी

❑श्रीश्यामनारायण पाण्डेय

राणा का जयकार भरा
इसमें स्वदेश का प्यार भरा।
शान्ति-जलधि में ज्वार भरा,
नीरत में हाहाकार भरा।।

साहस - बल - उद्गार भरा,
रण-चंडी का हुंकार भरा।
इसी भूमि के कण-कण में,
अरि नागों का फुंकार भरा।।

यही यही हल्दीघाटी है,
उछल कलेजा काट लिया।
अपनी लोहित जीभ बढ़ाकर,
रक्त हमारा चाट लिया।।

इसी समर के भय से कितने,
देवालय मसजीद हुए।
युद्धस्थल है वही जहाँ नर,
मर-मर अमर शहीद हुए।।

अबतक जिससे सिर ऊँचा है,
ऐसा ही कुछ काम किया।
बिगुल बजाकर यहीं भयंकर,
राणा ने संग्राम किया।।

जन रक्षा के लिए यहीं,
कण-कण में रक्त बहाया था।
इसी भूमि पर राणा ने,
अपना सर्वस्व लुटाया था।।

चवहत्तर मन तोल दिये थे,
राणा ने उपवीत यहीं।
दुश्मन से कह दिया तुम्हारी,
हार हुई है जीत नहीं।।

कूद पड़े सब वीर सिपाही,
इसी धधकती ज्वाला में।
यहीं देश पर मर मिटने का,
देखा साहस झाला में।।

मौन-मौन गिरि कहते हिल मिल,
गाथा वीर जवानों की।
एक-एक पत्थर कहता है,
करुण-कथा बलिदानों की।।

तरु के पत्तों पर अंकित,
राणा की अमर कहानी है।
अब तक पथ से मिटी नहीं,
चेतक की चरण-निशानी है।।

'स्वतंत्रता के लिये मरो',
राणा ने पाठ पढ़ाया था।
इसी वेदिका पर वीरों ने,
अपना शीश चढ़ाया था।।

तुम भी तो उनके वंशज हो,
काम करो, कुछ नाम करो।
स्वतन्त्रता की बलि-वेदी पर,
झुककर इसे प्रणाम करो।।

('हल्दीघाटी' महाकाव्य से, साभार)

महाराना प्रतापसिंह

❑मैथिली शरण गुप्त

राना प्रताप - समान तब भी शूरवीर यहाँ हुए,
स्वाधीनता के भक्त ऐसे श्रेष्ठ और कहाँ हुए?
सुख मानकर बरसों भयंकर सर्व दुःखों को सहा,
पर व्रत न छोड़ा, शाह को बस तुर्क ही मुख से कहा।

चित्तौर चम्पक ही रहा यद्यपि यवन अलि हो गये,
धर्म्मार्थ हल्दीघाट में कितने सुभट बलि हो गये!
कुल-मान जब तक प्राण तब तक, यह नहीं तो वह नहीं,
मेवाड़ भर में वक्तृताएँ गूँजती ऐसी रहीं।

('भारत-भारती' से, साभार)

ग्रीष्म

❑राघवेन्द्र शर्मा त्रिपाठी 'ब्रजेश'

मारतण्ड मण्डल को आतप अखण्ड पाय
सीतल समीर ह्वै असीतल बिसार्‌यो नात।
धूरधार धूसरित देखियत चारों ओर
बिपिन समाज ग्राम गेह आपनों त्यों गात।
देखो तो ब्रजेश बेस ग्रीषम दुपाहरी मैं
मृग गन भीर भूरि भ्रमत भुलानो जात।
कोकिल कपोत कीर आदिक पखेरू निज
प्रानन बचावैं देह झाँपि कै द्रुमन पात।।

('ब्रजेश विनोद' से)

–ग्राम–गोनी, पोस्ट–गोंडवा, जिला–हरदोई

राजस्थान-समाचार

आर्य समाज रावतभाटा का चिन्तन शिविर

कोटा। आर्य समाज रावतभाटा का तीन दिवसीय वैदिक चिन्तन शिविर ५ मई २०१६ को सम्पन्न हुआ जिसमें मुख्य अतिथि थीं डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कोटा की प्राचार्या श्रीमती रंजना गौतम और कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान नरदेव आर्य ने की। विशिष्ट अतिथि अर्जुनदेव चड्ढा तथा सम्माननीय अतिथ श्री राधेश्याम गुप्ता एवं किशनलाल गहलोत थे। मुख्य अतिथि सरिता रंजन गौतम ने काह कि महर्षि दयानन्द के पदचिन्हों पर चलकर युवा पीढ़ी आगे बढ़े एवं आर्य समाज के कार्य को विस्तार दे। उन्होंने युवाओं के लिए चिंतन एवं चरित्र निर्माण शिविर लगाने पर आर्य समाज रावतभाटा की सराहना की। विशिष्ट अतिथि अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि युवा वैदिक सिद्धान्तों को अपने जीवन में धारण करें। चरित्रवान बनें तथा संस्कारवान जीवन जिएं। दिल्ली से पधारे वैदिक विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। आचार्य जी ने ब्रह्माण्ड व पिण्ड का संबन्ध स्थापित करते हुए बताया कि जैसे सूर्य और पृथ्वी अंतरिक्ष में एक दूसरे के आकर्षण में बंधे हैं उसी प्रकार पति-पत्नी एक दूसरे के आकर्षण में बंधे हैं और नई-नई सृष्टि की उत्पत्ति करते हैं। आचार्य जी ने परमाणु विज्ञान नामक पुस्तक लिखी जिसमें वेदों के माध्यम से विज्ञान को समझाया गया है।

वैदिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार में विशिष्ट योगदान देने वाले आर्यजनों का साफा, शॉल, स्मृतिचिन्ह व सम्मान पत्र देकर सम्मान किया गया। जोधपुर के श्री किशनलाल गहलोत को 'आर्य विभूति', श्री मदनलाल तंवर को 'आर्य विद्याश्री', ब्यावर के श्री मोहनलाल को 'आर्य जिज्ञासु', बिहार के श्री अशोक कुमार गुप्ता को 'आर्य प्रचारक', दिल्ली के कमल आर्य को 'आर्य मित्र' सम्मान से अलंकृत किया गया। इंदौर से प्रकाशित वैदिक संसार पत्रिका के सम्पादक सुखदेव शर्मा के साथ ही आर्य समाज रावतभाटा के सत्संग भवन निर्माण के सहयोगी २७ भामाशाहों को सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त आर्य वीरांगना दल, शारदा साहित्य मंच, भारती विचार शोध संस्था को भी स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। कार्यक्रम में वैदिक विद्वान् आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, आचार्य शोभाराम आर्य, आर्य समाज बांरा, खेड़ारसूलपुर, तलवंडी के प्रतिनिधिगण, वेद प्रचार समिति कोटा के प्रधान श्रीचंद गुप्ता एवं अन्य आर्य जन मौजूद थे।कार्यक्रम को संचालन मंत्री ओम प्रकाश आर्य ने किया। शांतिपाठ और प्रीतिभोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। *(नरदेव आर्य)*

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का निर्वाचन

जयपुर/कोटा, १६ मई। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की आमसभा प्रांतीय कार्यालय राजापर्क जयपुर में आयोजित की गई। उक्त आमसभा प्रधान विजयसिंह भाटी की अध्यक्षता में आयोजित की गई जिसमें गतवर्ष की गतिविधियों की जानकारी सभा मंत्री डॉ.सुधीर कुमार शर्मा द्वारा दी गई। इस आमसभा में नई कार्यकारिणी के चुनाव हेतु निर्वाचन अधिकारी रामपाल विद्याभास्कर, धर्मवीर सिंह व ओम प्रकाश विद्यावाचस्पति को नियुक्त किया गया तथा उनकी देखरेख में सर्व सम्मति से चुनाव सम्पन्न करवाये गये।

जोधपुर के विजय सिंह भाटी को प्रधान, जयपुर के देवेन्द्र कुमार शास्त्री को मंत्री, जयपुर के डॉ.संदीपन कुमार को कोषाध्यक्ष व जयपुर के ही अशोक कुमार शर्मा को पुस्तकालयाध्यक्ष चुना गया। इसके अतिरिक्त जगदीश प्रसाद आर्य जयपुर, डॉ.सुधीर कुमार शर्मा जयपुर, रविशंकर आर्य भरतपुर, रमेश गोस्वामी कोटा, मदनलाल आर्य अजमेर, सेवाराम जांगिड़ जोधपुर, नरदेव आर्य उदयपुर व स्वामी सुखानंद बीकानेर को उपप्रधान पद पर निर्वाचित किया गया। साथ ही अंतरंग सभा के लिए १४ सदस्यों का निर्विरोध निर्वाचन किया गया। निर्वाचन के पश्चात नई कार्यकारिणी को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई गई। सभा में राजस्थान के आर्य समाजों के भारी संख्या में प्रतिनिधि उपस्थित रहे। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। *(देवेन्द्र शास्त्री, मंत्री)*

आर्य समाज ने पक्षियों के लिए बांधे परिण्डे

कोटा, ८ मई। आर्य समाज कोटा द्वारा अपने सामाजिक सरोकार के कार्यों की शृंखला के अंतर्गत पक्षियों के लिए कोटा में बूंदी रोड स्थित आजमगढ़ साहिब गुरुद्वारे में परिंडे बांधने का कार्य किया। आर्य समाज के पूर्व जिला प्रधान अर्जुन देव चड्ढा के नेतृत्व में डी.ए.वी.कोटा की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम, अमरोहा उ.प्र. से पधारे आर्यावर्त केसरी समाचार पत्र के सम्पादक डॉ.अशोक आर्य, आचार्य शोभाराम एवं वेदमित्र वैदिक ने गुरुद्वारा साहिब जाकर परिंडे बांधे। इस अवसर पर अर्जुनदेव चड्ढा ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज प्राणी मात्र के भले के लिए कार्य करने वाली संस्था है, इस भीषण गर्मी में पक्षियों के लिए परिण्डे बांधना पुण्य का कार्य है। परिण्डे बांधन के इस अवसर पर सिख धर्म आचार्य ज्ञानी गुरुनाम सिंह ने कहा कि परोपकार के कार्य करना ही सबसे बड़ा धर्म है। इस श्रेष्ठतम कार्य में आचार्य शोभाराम आर्य एवं डॉ.अशोक आर्य ने वेदमंत्रों का उच्चारण करते हुए परिण्डे बांधे। *(अर्जुनदेव चड्ढा)*

सण्डीला-समाचार

'अमन' होंगे सम्मानित

लाला गंगा प्रसाद मानव कल्याण समिति, सण्डीला जनपद हरदोई ने आई.सी.एस.ई. हाईस्कूल परीक्षा २०१६ में हरदोई जिले में प्रथम स्थान पाने वाले अमन सिंह को सम्मानित करने का निश्चय किया है। यह सम्मान समिति द्वारा प्रत्येक माह लगने वाले आई कैंप के अवसर पर दि.१६.०६.१६ को प्रदान किया जायगा। यह जानकारी सण्डीला के जनप्रिय चिकित्सक एवं आर्यनेता डॉ.सत्य प्रकाश ने 'आर्य लोक वार्ता' को दी है।

बताते चलें कि सण्डीला के सेण्ट थेरेसा स्कूल के छात्र अमन सिंह ने ९३.६ प्रतिशत अंक हासिल किये हैं। सण्डीला के स्टेशन रोड निवासी अशोक कुमार सिंह डाक विभाग में सब पोस्टमास्टर हैं। उनकी पत्नी रमाकांती गृहिणी हैं। अशोक और रमाकांती के पुत्र अमन सिंह ने दिन में आठ घंटे तक पढ़ाई कर जनपद में टॉप किया है। अमन की छोटी बहन आकृति सिंह है। अमन मैथ्स और कंप्यूटर साइंस से आगे की पढ़ाई कर आईआईटी में पढ़ने के बाद प्रशासनिक सेवा में जाना चाहता है। उसने सफलता का श्रेय मेहनत, गुरुजनों और माता-पिता को दिया।

डाक-वितरण व्यवस्था सुधरी

डॉ.सत्य प्रकाश जी ने जानकारी दी है कि इस बार उन्हें 'आर्य लोक वार्ता' के अंक डाक-वितरण द्वारा प्राप्त हो रहे हैं। आशा है कि सण्डीला के अन्य सदस्यों को भी 'आर्य लोक वार्ता' उपलब्ध हो रहा होगा। आर्य लोक वार्ता के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने सण्डीला एवं जनपद हरदोई के सदस्यों से यह अनुरोध किया है कि वे 'आर्य लोक वार्ता' के सदस्य बनें तथा अपनी न्यूनतम सहयोग राशि डा.सत्य प्रकाश जी, प्रकाश होम्यो हॉल, सदर बाजार सण्डीला के पास अविलम्ब जमा कर दें।

अयोध्या-समाचार

अयोध्या - विशेष आध्यात्मिक क्षेत्र

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी की जन्मभूमि अयोध्या के इर्द गिर्द १२५ किलोमीटर के क्षेत्र को एक विशेष आध्यात्मिक क्षेत्र के रूप में विकसित करने हेतु प्रयास आरम्भ हो गये हैं। इस योजना को अमली जामा पहनाने हेतु डॉ.कमल टावरी अन्तर्राष्ट्रीय पंचायती राज एवं समग्र ग्रामीण विकास संस्थान के निदेशक श्री विजय तिवारी अग्रसर हैं। आपको इस कल्याणकारी शान्ति प्रदायिनी योजना को श्री सोम मोदी (श्री नरेन्द्र दामोदर मोदी के अनुज) का सक्रिय सहयोग और आशीर्वाद प्राप्त है।

आध्यात्मिक क्षेत्र के विकास की इस योजना की रूपरेखा लेकर श्री तिवारी ने महामहिम राज्यपाल उ.प्र. श्री रामनाईक तथा माननीय श्री वेंकैया नायडू उपराष्ट्रपति से भेंट करके उनका सहयोग और आश्वासन प्राप्त कर लिया है। श्री तिवारी के अनुसार आम चुनाव तथा नई सरकार के गठन की प्रक्रिया के पूर्ण होने के पश्चात् इस योजना पर आगे कार्य प्रारम्भ किया जायगा।

ज्ञातव्य है कि इसी आध्यात्मिक क्षेत्र के अन्तर्गत सरयूबाग, अयोध्या का वह ऐतिहासिक स्थान भी आता है जहाँ बैठकर महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का प्रणयन किया था तथा तेजस्वी संस्कृतज्ञ संन्यासी स्व.स्वामी त्यागानन्द की तपोभूमि गुरुकुल महाविद्यालय, अयोध्या जैसे अनेक स्थान भी आते हैं।

लखनऊ-समाचार

श्री लक्ष्मणम आर्यमुनि आहत

ऋषि उद्यान अजमेर (राजस्थान) वानप्रस्थाश्रम में निवास करने वाले साधक श्री लक्ष्मण आर्यमुनि आकस्मिक रूप से आहत हो गये हैं। सड़क पार करते समय एक टेम्पो ने असावधानी वश उनको टक्कर मार दी, जिससे उन्हें चोटें आई हैं। सम्प्रति चिकित्सा उपलब्ध कराई जा रही है।

परमात्मा से प्रार्थना है कि श्री लक्ष्मण जी को शीघ्र स्वस्थ कर दे जिससे समाज सेवा एवं साधना कार्यक्रम को वे पूरा कर सकें। (-आर्य लोक वार्ता)

श्री प्रेमचन्द्र शर्मा आर्य लोक वार्ता प्रतिनिधि मनोनीत

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता एवं समाज सेवी श्री प्रेमचन्द्र शर्मा, १५- बहादुर पुर (जानकी पुरम) लखनऊ को आर्य लोक वार्ता का प्रतिनिधि मनोनीत किया गया है। श्री प्रेमचन्द्र शर्मा को स्वाध्याय के लिये प्रेरित करने तथा सहयोग राशि संकलन करने का दायित्व सौंपा गया है। कृपया सहयोग राशि देकर श्री शर्मा (मो.८७९६५२१६३१) से रसीद प्राप्त कर लें। *-संपादक*

आर्य्य लोक वार्ता

'ऋत्विक्-मंडल'

(प्रतिवर्ष 1500 रु. या अधिक सहयोगकर्त्ता)

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, ज्वालापुर, **हरिद्वार**; विद्यासागर फाउण्डेशन, **मेरठ**; श्री अम्बिका प्रसाद एडवोकेट, **लखनऊ**; श्री आनन्द कुमार आर्य, टाण्डा, **अम्बेडकरनगर**; श्री पाल प्रवीण, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती कमलेश पाल, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती प्रमोद कुमारी, अलीगंज, **लखनऊ**; श्री अभिषेक, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती गीतांजलि, अलीगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मिनी स्वरूप, **नई दिल्ली**; कर्नल पाल प्रमोद, **मेरठ**; श्री अरविन्द कुमार, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती शालिनी कुमार, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, **लखनऊ**; डॉ.प्रशिषा, प्रधानाचार्या, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज, टाण्डा, **अम्बेडकरनगर**; श्रीमती मधुर भंडारी, **नई दिल्ली**; श्री पीयूष गुप्त, **सिंगापुर**; श्रीमती प्रकाश अग्रवाल, **बरेली**; डॉ.सी.वी.पाण्डेय, सर्वोदय नगर, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; श्रीमती प्रमिला पाल, मवाना, **मेरठ**; श्री दीपक कुमार दर्शन, **लखनऊ**; श्री बी.एन.टण्डन, **बहराइच**; श्री अनूप टण्डन, **मेरठ**; डॉ.वेद प्रकाश बटुक, **मेरठ**; श्री नरेन्द्र भूषण, जानकीपुरम, **लखनऊ**; श्री आर. सी. यादव, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**; चौधरी रणवीर, प्रधान, आर्य समाज, **सीतापुर**; श्रीमती मनीषा त्रिवेदी, **दुबई**; श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा, **राजस्थान**; श्री नरसिंह पाल एडवोकेट, **लखनऊ**; श्रीमती मीना दीक्षित, गोमती नगर, **लखनऊ**; इं.जे.पी.अग्रवाल, गायत्रीलोक, कनखल, **हरिद्वार**; श्रीमती प्रियदर्शिनी मित्तल, **बंगलौर**; श्री आर.के.शर्मा, जानकीपुरम, **लखनऊ**; श्री बाँके बिहारी 'हर्ष', अक्ष मोटर वर्क्स, **फैजाबाद**; श्रीमती रामा आर्य 'रमा', नेवाजगंज, **लखनऊ**; श्रीमती मालती त्यागी, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती कृष्णा बजाज, **बरेली**; श्रीमती रेनू भसीन, चन्द्रनगर, **लखनऊ**; श्रीमती प्रियंका शर्मा, जानकीपुरम, **लखनऊ**; महात्मा प्रेममुनि, आर्य समाज, हसनगंज पार, **लखनऊ**; श्रीमती अनीता सिंह, प्रिंसिपल, डी.ए.वी.एकेडमी, टाँडा, **अम्बेडकरनगर**; श्रीमती वेद रतना खत्री, हिन्द नगर, आलमबाग, **लखनऊ**; श्री आत्म प्रकाश बत्रा, आर्य समाज, आदर्श नगर, **लखनऊ**; श्री विश्वमित्र शास्त्री, आर्य समाज, अलीगंज, कुर्सी रोड, **लखनऊ**; श्री रण सिंह, आर्य समाज, चन्द्र नगर, **लखनऊ**; श्री रवीन्द्र त्यागी, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्री महेशचन्द्र द्विवेदी, विवेक खण्ड, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती कुमुद गुप्ता, अलीगंज, **लखनऊ**; आचार्य आनन्द मनीषी, राजाजीपुरम, **लखनऊ**; श्रीमती यशोदा शर्मा, जानकीपुरम्, **लखनऊ**; श्री कृष्ण स्वरूप चौधरी, गोमती नगर, **लखनऊ**; श्रीमती सुधा चौधरी, गोमती नगर, **लखनऊ**; डॉ.सत्यकाम आर्य, जानकीपुरम, **लखनऊ**; श्री प्रदीप कुमार श्रीवास्तव एडवोकेट, निशात गंज, **लखनऊ**; श्री अरुण विरमानी, चन्द्रनगर, **लखनऊ**; डॉ.मनोरमा तिवारी, अलीगंज, **लखनऊ**।

लखनऊ-समाचार

अमृत का नया अवतार

'आर्य लोक वार्ता' के सुपरिचित हस्ताक्षर- वेदों के काव्यानुवाद के ख्यातिलब्ध गीतकार कवि अमृत खरे- जब कभी कवि सम्मेलन के मंच पर या साहित्यिक समारोहों में अपने गीत सुनाते हैं तो उनकी स्वर-लहरी सभी के मनों को बाँध लेती है। अब उनके आधुनिक वाद्ययंत्रों पर संगीत बद्ध गायन को सुनना एक नये अनुभवों के दौर से गुजरने का अवसर उपलब्ध हो गया है। कुछ दिन पूर्व हारमोनियम पर उँगलियों को सजाते हुए उनका एक गीत- 'टटके टटके नयन तुम्हारे टोना मार गये'- सुना तो सुनता ही रह गया। यही इच्छा हो रही थी कि बार बार इसे ही सुना जाय। किन्तु 'नयनों' के संगीत-सम्मोहन से उबर भी नहीं पाये थे कि पता चला- अमृत खरे द्वारा गाया गया संगीत बद्ध गीत 'देह हुई मधुशाला' यू-ट्यूब पर जारी हुआ है। यह गीत 'आर्य लोक वार्ता प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित उनके गीत-संग्रह 'मयूर-पंख' में संग्रहीत है, जो अब यू-ट्यूब पर संगीत-रचना के रूप में उपलब्ध है। गीत की धुन स्वयं अमृत खरे ने बनायी है और वाद्ययंत्रों की संगत के लिए म्यूजिकल की-बोर्ड (सिंथेसाइजर) का उपयोग किया है। इस नये रूप के लिये भी उन्हें भरपूर सराहना मिली है।

ज्ञातव्य है कि श्री खरे द्वारा बनाई गयी लघु फिल्म 'ये कैसा समाधान' (निर्देशक-संजय माथुर, अभिनेता-प्रभात मिश्र) को यू-ट्यूब पर उन्नीस हजार से अधिक बार देखा जा चुका है। अमृत खरे का यू-ट्यूब पर अपना चैनल 'अमृत फिल्म्स' के नाम से है।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ

वार्षिक निर्वाचन की तिथि में परिवर्तन

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ की अंतरंग बैठक दि. ६ जून, २०१६ को नैनीताल में आयोजित की गई है। इस बैठक में जनपद लखनऊ से काफी संख्या में आर्यजन भाग लेंगे।

अतः निर्णय लिया गया है कि जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ का वार्षिक निर्वाचन कार्यक्रम ६ जून २०१६ के स्थान पर १६ जून २०१६ (रविवार) को सायं ४ बजे से नगर आर्य समाज लखनऊ में पूर्व निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार सम्पन्न होगा। इससे समस्त आर्य समाज के प्रतिनिधियों को दोनों कार्यक्रमों में सम्मिलित होने का सुअवसर प्राप्त होने में आसानी हो जायेगी। *(प्रबोध सागर जौहरी, मंत्री)*

स्मृति दिवस समारोह

विश्व मित्र, सर्वमित्र तथा अखिलमित्र सरीखे सुयोग्य पुत्रों की माता स्मृतिशेष ऊर्मिला शास्त्री (स्व.आचार्य ओजोमित्र शास्त्री की धर्मपत्नी) का प्रथम स्मृति-दिवस दि. ०६.०४.१६ को शास्त्री निवास, सी-१०२८, कल्याण विहार, कमता (चिनहट) लखनऊ में श्रद्धा-भक्ति के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्वानों का सत्कार किया गया, अतिथियों एवं निर्धन जनों को भोजन कराया गया।

स्मृति दिवस के अवसर पर बृहद् यज्ञ आकर्षण का केन्द्र बना, जिसमें शुद्ध सुगन्धित हवन सामग्री का उपयोग किया गया तथा सन्तोष कुमार वेदालंकार, विश्वव्रत शास्त्री, आचार्या निष्ठा विद्यालंकार, सत्य प्रकाश आचार्य एवं डॉ.सत्यकाम आर्य जैसे विशिष्ट विद्वानों ने वेदपाठ किया एवं यज्ञ का संचालन किया। मित्र-बन्धुओं के साथ ही श्रीमती शीला, सत्यप्रभा एवं नीता इत्यादि विदुषियों ने यज्ञ में आहुतियाँ देकर श्रद्धेया माताजी को श्रद्धांजलि भेंट की।

यज्ञ के पश्चात वक्ताओं ने प्रवचन एवं गीतकारों ने गीतों के गायन से एक आध्यात्मिक वातावरण की सृष्टि की। इस अवसर पर जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री नवनीत निगम, मंत्री श्री प्रबोध सागर जौहरी के अलावा बाराबंकी एवं नगर आर्य समाजों के प्रतिनिधिगण, सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट के सदस्यगण एवं क्षेत्रीय नर नारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। *(अखिल मित्र शास्त्री)*

'यूरो किड्स' - शिशु शिक्षा का प्रबंधन

गोमती नगर विस्तार में खरगापुर के विकासोन्मुख क्षेत्र में शिशु शिक्षा की सुव्यवस्था की दृष्टि से श्रीमती मीता जायसवाल, निदेशक स्कालेयर कन्सल्टेंसी बड़ोदरा एवं श्रीमती ममता जायसवाल, प्रिंसिपल सनबीम, वाराणसी द्वारा सराहनीय कदम उठाये गये हैं। इस शिक्षा योजना को श्री आनन्द कुमार आर्य, प्रबंधक डी. ए.वी.एकेडमी, टाण्डा का आशीर्वाद प्राप्त है। श्री मनीष कुमार आर्य एवं श्रीमती श्वेता जी भी सहयोगी की भूमिका निभा रही हैं।

'यूरो किड्स' नामक इस प्री-स्कूल का शुभारंभ/उद्घाटन दि.२३ मई, २०१६ को हाईकोर्ट लखनऊ के माननीय न्यायाधीश महेन्द्र दयाल एवं डान बास्को इंस्टीट्यूट के प्रिंसिपल रे.फा.जार्ज थार्यजिट् के द्वारा सम्पन्न हुआ।

शिक्षा केन्द्र के औपचारिक उद्घाटन से पूर्व दि.०४ मई २०१६ को सायं ५ बजे २६-ए, विजयनगर, खरगापुर में वैदिक यज्ञ श्री पं.दीनानाथ शास्त्री एवं आचार्य डॉ.वेद प्रकाश आर्य के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर शास्त्री पं.दीना नाथ ने संकारित शिशु शिक्षा की आवश्यकता पर प्रकाश डाला तथा डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने कहा- 'चाइल्ड इज द नेशन' अर्थात् शिशु एक राष्ट्र है। इस अवधारणा को लेकर अग्रसर होने की आज आवश्यकता है। श्री आनन्द कुमार आर्य (टाण्डा) ने यज्ञकर्ताओं के प्रति अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त कीं तथा जनता को श्रेष्ठ सुन्दर शिक्षा के प्रति आश्वस्त किया।

सार्थक-मान्यता का जन्म दिवस

रविवार, २१.०४.२०१६, क्रिस्टल व्यू अपार्टमेंट, फ्लैट नं.६१६ फैजाबाद रोड, लखनऊ। एक उम्र, एक सी सूरत शक्ल, एक ही दिन में जन्म लेने वाले दो सुन्दर बच्चों का जन्म दिवस, वैदिक हवन यज्ञ के साथ बड़ी सादगी और आध्यात्मिक वातावरण में मनाया गया। बच्चों के नाम भी बहुत मनोहर हैं- मान्यता (पुत्री), सार्थक (पुत्र)। श्रीमती श्वेता और श्री मनीष कुमार आर्य के दोनों बच्चे हैं; जिन्हें आशीर्वाद देने हेतु उनके दादा-दादी कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य और श्रीमती मीना आर्य जी उपस्थित थीं। श्री संजय मिश्र एडवोकेट ने अपनी शुभकामनाएँ अर्पित कीं। सुन्दर यज्ञ का संचालन इसी वातावरण के अनुरूप था। यज्ञ के संचालक डॉ.वेद प्रकाश आर्य का सदुपदेश एक छन्द में मूर्तिमान हो उठा; जिसने सभी उपस्थित जनों को भावमय कर दिया।

वेदानुकूल है जो वही ग्राह्य, जो वेद विरुद्ध निरर्थक है,
साधन भी है वही कमनीयजो नित्य नवीन परार्थक है।
मार्ग वही अभिनंदन योग्य,जो ध्येय में लोक हितार्थक है।
वैदिक धर्म की डोर गहो, जिसकी हर मान्यता सार्थक है।।

दिल्ली-समाचार

राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त होने पर डॉ.रघुवीर वेदालंकार का भावपूर्ण सम्मान

आर्य समाज के प्रतिष्ठित विद्वान् डॉ.रघुवीर वेदालंकार को भारत सरकार द्वारा ०४ अप्रैल, २०१६ को 'राष्ट्रपति सम्मान' से पुरस्कृत किया गया। इसी उपलक्ष्य में २१ अप्रैल, २०१६ को आर्य समाज सरस्वती विहार में डॉ.रघुवीर के अभिनन्दन का कार्यक्रम रखा गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री विनय आर्य ने सभा की ओर से प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए कहा कि वैदिक सिद्धान्तों एवं वेदों के विषय में विरोधियों द्वारा जो कुछ भी अनर्गल आक्षेप किये जाते हैं, उनको उत्तर देने के लिए हम डॉ.रघुवीर जी को आगे करते हैं क्योंकि ये वेदादि शास्त्रों के प्रौढ़ विद्वान तथा महर्षि के अनन्य भक्त हैं। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य ने कहा कि पं.राजवीर शास्त्री तथा डॉ.रघुवीर जी ने जिस योग्यता पूर्वक सरल, हृदयग्राही शैली में मुझे पाणिनीय व्याकरण का ज्ञान कराया, वह स्मरणीय है एवं श्लाघनीय है। समारोह के मुख्य अतिथि ठाकुर विक्रम सिंह ने कहा कि डॉ.रघुवीर जी न केवल यहीं पर अपितु अपने ग्रामीण क्षेत्र में भी अपनी विद्वता, कर्मठता एवं सरल निश्छल स्वभाव के कारण सुप्रसिद्ध हैं। समारोह के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी ने कहा डॉ.रघुवीर को मैं १६६० से इनके छात्र जीवन से ही जानता हूँ। इनका व्यवहार, आचरण तथा विद्या के प्रति अनुराग तभी से हम सभी के लिए अनुकरणीय रहा है। अन्त में डॉ.रघुवीर जी ने सभी आगन्तुक महानेभावों का धन्यवाद करते हुए कहा कि मेरे जीवन की जो भी उपलब्धियां हैं, उनमें मेरे माता-पिता, मेरे पूज्य गुरुजनों तथा आर्य समाज का ही योगदान हैं। समूचा आर्य समाज ही मेरा घर है, अतः यह सम्मान अकेले मेरा नहीं, अपितु समस्त आर्य समाज का सम्मान है, विद्या का सम्मान है। *('आर्य संदेश' से)*

आर्य समाज आदर्शनगर का निर्वाचन

दि. २८.०४.२०१६ को आर्य समाज आदर्श नगर लखनऊ का वार्षिक साधारण अधिवेशन तथा वर्ष २०१६-२० के लिए कार्यकारिणी का चुनाव हुआ, जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये-

कर्नल ओम प्रकाश वर्मा	संरक्षक
श्री राजेन्द्र हूजा	सह संरक्षक
श्री हरीश निझावन	प्रधान
श्री संजीव जोशी	उपप्रधान
श्री रुद्र स्वरूप	मंत्री
श्रीमती विजया रानी	उप मंत्री
श्री वीरेन्द्र निझावन	कोषाध्यक्ष
श्री आत्म प्रकाश बत्रा	उपकोषाध्यक्ष
श्रीमती शृंखला	भण्डारनायक
श्री प्रदीप सक्सेना	पुस्तकालयाध्यक्ष
श्री अम्बरीश अग्रवाल	लेखा निरीक्षक

अंतरंग सदस्य-श्री सतीश चन्द्र बिसारिया, श्री सुभाष चन्द्र विज, श्री आनन्द स्वरूप, श्रीमती सुनीता शर्मा, श्रीमती सुमन भारतीय, श्रीमती नीलम सक्सेना। *(रुद्र स्वरूप, मंत्री)*

'आर्य्य लोक वार्ता' के स्वामित्व आदि का विवरण

1. प्रकाशन का स्थान : 'वेदाधिष्ठान', 539क/234 हरीनगर, इन्दिरानगर, लखनऊ – 226 016
2. प्रकाशन की अवधि : मासिक
3. मुद्रक का नाम : डॉ. वेद प्रकाश आर्य राष्ट्रीयता : भारतीय पता : 'वेदाधिष्ठान', 539क/234 हरीनगर, इन्दिरानगर, लखनऊ – 226 016
4. प्रकाशक : डॉ. वेद प्रकाश आर्य राष्ट्रीयता : भारतीय पता : 'वेदाधिष्ठान', 539क/234 हरीनगर, इन्दिरानगर, लखनऊ – 226 016
5. सम्पादक : डॉ. वेद प्रकाश आर्य राष्ट्रीयता : भारतीय पता : 'वेदाधिष्ठान', 539क/234 हरीनगर, इन्दिरानगर, लखनऊ – 226 016
6. स्वामित्व : डॉ. वेद प्रकाश आर्य राष्ट्रीयता : भारतीय पता : 'वेदाधिष्ठान', 539क/234 हरीनगर, इन्दिरानगर, लखनऊ – 226 016

मैं (डॉ. वेद प्रकाश आर्य) एतद्द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर लिखा सब विवरण सत्य है।

–डॉ. वेद प्रकाश आर्य

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निर्देशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
डॉ0 वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-638/181डी, शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप, पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9651333679

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 7310119999

नवोन्मेष
कृष्णा जी. पिंटेक

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651

प्रतिष्ठापक
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता घर-घर में